इकाई 3 चेम्मीन : विषयवस्तु, कथानक एवं पात्रसृष्टि

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 विषयवस्तु

3.3 चेम्मीन : कथा सार

3.4 कथानक

3.5 पात्रसृष्टि

- 3.5.1 परीक्कुट्टि
- 3.5.2 करुत्तम्मा
- 3.5.3 पलनि
- 3.5.4 चेम्पनकुंजु
- 3.5.5 चक्कि

3.6 सारांश

3.7 प्रश्न

3.0 उद्देश्य

इस खण्ड की यह तीसरी इकाई है जिसका अध्ययन करने के बाद आप चेम्मीन की विषयवस्तु, कहानी और पात्रों से परिचित हो सकेंगे। यदि आपने चेम्मीन उपन्यास पढ़ लिया है तो आप को यहाँ दिए गए उसके सारांश को समझने में आसानी रहेगी। यदि आपने यह उपन्यास नहीं पढ़ा है तो हमारी राय है कि आप उसे पढ़ लें।

3.1 प्रस्तावना

चेम्मीन उपन्यास तकषि की रचना-यात्रा के तीसरे चरण की रचना है। चेम्मीन से पहले तकषि की रचना-यात्रा कई सृजनात्मक मोड़ों से गुज़र चुकी थी। मार्क्सवादी विचारधारा से उनका परिचय हो चुका था जिसने उनकी पहले से चली आ रही मान्यताओं को और ज्यादा पुष्ट ही किया। तकषि की 'दो सेर धान' 'भंगी का बेटा' या 'भिखारी वर्ग' सरीखी रचनाएँ समाज के कटु यथार्थ का तीक्ष्ण आलोचनात्मक दृष्टि से भेद करने वाली रचनाएँ हैं। इन रचनाओं से तकषि मलयालम में अग्रणी साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित हो गए। किंतु श्रेष्ठतम साहित्य वैचारिक सीमाओं से परे जाकर संवेदना के व्यापक धरातल पर प्रतिष्ठित होता है। इस बात को हम चेम्मीन में देख सकते हैं। चेम्मीन विचारधारा की किसी बंधी-बंधायी लीक पर न चल कर विकसित हुआ है और न ही विचारधारा को छोड़कर। वस्तुतः चेम्मीन समाज के एक विशेष समुदाय के जीवन की जीवंत कथा है। उस समुदाय की धड़कनों से स्पंदित, उनके दुःख-सुख की एक मानवीय कहानी। यह जितनी सरल है, उतनी ही ऊँची भी। आइए देखें चेम्मीन की विषय वस्तु के ताने-बाने क्या हैं, कहानी क्या है और कथानक कैसे विकसित होता है। चेम्मीन के महत्वपूर्ण पात्रों पर भी इस इकाई में हम दृष्टि डालेंगे।

3.2 विषयवस्तु

इतिहास-पुराण महाकाव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी, चित्रकला, शिल्प जैसी किसी भी कलासृष्टि का जो केन्द्र विचार है वह अमूर्त है। कोशिका (Cell) में न्यूक्लियस का जो

स्थान और महत्व रहता है वही कलाकृति में विषयवस्तु का। उपन्यास, नाटक आदि रचनाओं में नब्बे प्रतिशत से अधिक प्रेम को विषयवस्तु के रूप में स्वीकारा गया है। प्रेम मानव जाति के अस्तित्व की आधारभूत नैसर्गिक चेतना है। प्रेम को इतना व्यापक महत्व मिलने का यही प्रमुख कारण है।

तकषि के प्रमुख उपन्यास - दो सेर धान (1948), मछुआरे (चेम्मीन 1956) औसेप के बेटे (1959) एणिप्पटिकल सोंठ (सीढ़िया - 1964) आदि उपन्यासों में प्रेम मुख्य विषयवस्तु है। प्रेम की अभिव्यक्ति सबसे अधिक की जाने के कारण प्रत्येक रचनाकार के लिए प्रेम के साधारणत्व में असाधारणत्व सिखा देना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। उस चुनौती को स्वीकारने में ही कलाकार की प्रतिभा की पहचान संभव होती है। इस कोटि के सफल इने-गिने रचनाकारों में एक हैं - तकषि।

तकषि के उपन्यासों एवं कहानियों में प्रेम की अनेक अवस्थाओं का सूक्ष्मातिसूक्ष्म चित्रांकन किया गया है। प्रेमियों के स्वभाव, बर्ताव, जीवन-दृष्टिकोण, जाति, धर्म, संपत्ति, अधिकार, वगैरह प्रणय-भावना में व्यवधान उत्पन्न कर देते हैं। तकषि मनुष्य के मन को मढ़ने में माहिर हैं। धन कमाने हेतु वेश्या के कृत्रिम प्रेम से लेकर अपना प्राण एवं ज़िन्दगी तक का सौदा करके बदले में प्राप्त प्रेम तकषि के उपन्यासों में स्पंदित है। प्रेम की सफलता के लिए प्राण तक छोड़ने की संवेदना है 'चेम्मीन' उपन्यास में। प्रेमियों की निस्वार्थता तथा प्रेम की दृढ़ता का ही प्रदर्शन यहाँ नहीं है बल्कि विधर्मी होने के कारण वैवाहिक रिश्ते को ठुकरा देने वाली जाति व्यवस्था, औरत के पतित होने से समाज का सवर्नाश हो जाने का अन्धविश्वास, बेटी के प्रेम-संबंध का शोषण करके, उसके प्रेमी से रुपये वसूल करने वाले पिता की मानसिकता जैसे कई घटनाक्रमों के साथ एक अनुपम प्रेम-कथा का सृजन किया गया है।

3.3 चेम्मीन : कथा सार

केरल के समुद्री तट पर मछली पकड़कर जीवन-निर्वाह करने वाला एक समुदाय है अरय अथवा मछुआरे। मछुआरों के जीवन परिवेश का चित्रण है 'चेम्मीन'। आलप्पुषा इलाके के निकट के नीर्क्कुन्नम समुद्र तट पर चेम्पनकुंजु अपनी पत्नी चक्कि और दो बेटियों सहित निवास करता है। बड़ी लड़की करुत्तम्मा युवती हो चुकी है। अरय समाज में लड़कियों की शादी उनकी ग्यारहवीं उम्र में ही हो जाती है। करुत्तम्मा अब सोलह या सत्रह साल की हो गयी है। उसकी बहिन है पंचमी। छोटी-छोटी झोंपड़ियों में अरय जाति के लोग रहते हैं। चेम्पनकुंजु के बाल्यकाल सखा अच्छनकुंजु भी अपनी पत्नी नल्लापेण्णु के साथ पड़ोसी झोंपड़ी में रहता है। समुद्री तट से मछली खरीदकर बेचने के लिए एक अन्य धर्म-जाति का व्यक्ति आया करता था। उसके हाथ पकड़कर उसका बेटा परीक्कुट्टि भी समुद्री तट पर भ्रमण करता था। करुतम्मा और परीक्कुट्टि दोनों बचपन की दोस्ती के साथ-साथ बड़े हो गए। दोनों का एक दूसरे से लगाव था किंतु वे जानते थे कि दोनों का धर्म अलग होने के कारण समाज उनके प्रेम संबंध को मंज़ूर न करेगा। फिर भी दोनों प्रेम के दीवाने बन निकले। समाज के प्रतिरोधों का अनुसरण करके, मर्यादा की सीमाओं का उल्लंघन किये बिना मुलाकातों के ज़रिए दोनों की दोस्ती और दृढ़ बनने लगी।

अन्य जाति के सभी आदमियों को अपनी नाव और जाल के मालिक बनना संभव नहीं था। बहुत विरले थे जिनके पास अपनी नाव और जाल हो। किसी और की नाव में मल्लाह बन के ही आम लोग जाया करते थे। समुदाय का यह भी एक विश्वास था कि अरय-जाति के सभी लोग नाव नहीं खरीदते थे। मछुआरों की पाँच जाति होती है अरय, धीवर (जालिया), मछुआ, पोतकार (नाविक) और पंचमजात। इनमें धीवर जाति को ही नाव और जाल खरीदने का अधिकार है। सब लोग नाव के मालिक बन बैठे तो समुद्र में काम कौन करेगा? धीवर को भी समुदाय के मुखिया की अनुमति मिलनी चाहिए। तभी वह अपनी ओर से नाव और जाल खरीद सकता है। चेम्पनकुंजु मछुआरा है। वह एक चतुर नाविक भी है। सामाजिक नीतियों के विरुद्ध वह अपनी एक नाव खरीदना चाहता है। एक नाव का मालिक होने की

अपनी तीव्र अभिलाषा उसने प्रिय पत्नी से प्रकट भी की। और प्परीक्कुट्टि से जो कि एक सफल मछली व्यापारी है, नाव खरीदने के लिए रुपये उधार लेने की अपनी इच्छा भी व्यक्त की।

माँ-बाप की आपसी बातचीत सुनकर करुत्तम्मा ने परीक्कुट्टि से नाव और जाल खरीदने हेतु रुपये उधार माँग लिए।

'बप्पा नाव और जाल खरीदने जा रहे हैं। "

'अच्छा , नाव और जाल खरीदने के बाद नाव में जो मछली आएगी उसे व्यापार के लिए मुझे देने को अपने बप्पा से कहोगी?"

'अच्छा दाम दोगे तो मछली क्यों न मिलेगी?"

फिर जोरो की हँसी हुई। हाँ यह हँसी-मज़ाक सच निकल गया। मछली का सफल व्यापार करने के बाद संपत्ति आने पर भी चेम्पनकुंजु ने परीक्कुट्टि को पैसा नहीं लौटाया। इतना ही नहीं एक दूसरी नाव खरीदने के लिए उसे और रुपये उधार ले लिए। प्परीक्कुट्टि के ही डेरे से सूखी मछलियाँ बोरों में भरकर चेम्पनकुंजु बिक्री करता था। इस तरह वह परीक्कुट्टि का कर्ज़दार बन जाता था। दोनों नावों से खूब व्यापार तो हो गया। पर परीक्कुट्टि का धन उसने नहीं लौटाया। उसे लौटा देने की इच्छा भी उसके मन में लेश-मात्र नहीं रही। करुत्तम्मा ने एक बार माता से पूछा - "दूसरों को धोखा देने से समुद्र तट का सर्वनाश हो जाएगा कि नहीं?" 'उस बेचारे को धोखा देकर नाव और जाल नहीं लाना चाहिए। यह तो अन्याय है।' कर्ज़ वसूल करने के बहाने परीक्कुट्टि घर आ जाए, वह क्या कर सकती है? औरत के पतित हो जाने पर समुद्र तट पर उजड़ जाने का विश्वास सिखाने वाली माँ चक्कि के सम्मुख अब कोई जबाब नहीं था। 'मछुआरों का जीवन वास्तव में तट पर रहने वाली उनकी स्त्रियों के हाथ में ही है।' इस विचार से करुत्तम्मा सचेत हो उठी। अपने पिता की विचार शून्यता के खिलाफ आवाज़ उठाने की दृढ़ता उसमें आ गयी।

चेम्पनकुंजु अमीर बन गया। उसके स्वभाव बर्ताव में बड़ा अन्तर आ गया। एक मालिक की मानसिकता का संचार उसमें होने लगा। सुखी होने मात्र की इच्छा मन में रह गयी। बचपन के यार अच्चनकुंजु एवं अन्य साथियों को उसका यह स्वभाव कुछ अजीब सा लगा। चेप्पन के पास इतना रुपया कहाँ से आया? इतनी बचत कैसी होती है? - समुद्री तट पर यह चर्चा बनी रही। चेंपन ही बातचीत का विषय रहा। इसी संबंध में अच्चनकुंजु और चक्कि के बीच खूब झगड़ा हुआ। अच्चनकुंजु को ईर्ष्यालु माना गया। अच्चनकुंजु ने भी एक नाव खरीदने का निश्चय कर लिया। चेम्पनकुंजु के दिली दोस्तों ने निर्णय किया कि चेंपन का कार्य कलाप समुदाय की मर्यादायों के विरुद्ध हैं। पोतकार होने पर भी उसने नाव खरीदी है। तट के मुखिया की अनुमति नहीं ली है। सयानी लडकी जब घर में है तब कौन नाव और जाल खरीदने की बात सोच सकता है। दस साल में लड़की की शादी होनी चाहिए। यही समुद्र तट के कायदे-कानून हैं।

करुत्तम्मा ने घोर विरोध तो प्रकट किया। उसे मालूम हो गया था कि उसके और परीक्कुट्टि के अवैध प्रेमसंबंध का शोषण करने पर तुले हैं - उनके कंजूस पिताश्री। चेम्पनकुंजु में नयी-नयी अभिलाषाएँ जाग उठीं। 'चाकरा' हो जाए। जायदाद ज़मीन और मकान खरीदने के बाद ही बेटी की शादी हो तो ठीक है। बाप ने मर्यादा की रक्षा करने की चेतावनी दी। चक्कि की भी यही इच्छा हुई। माँ-बाप के कटुवचनों से करुत्तम्मा का हृदय बिंध गया।

स्त्रियों की पवित्रता या मर्यादा की बात जब चक्कि ने दोहराई तब करुत्तम्मा को अपनी माँ पर यह आरोप लगाने में संकोच ज़रा भी नहीं हुआ कि पवित्रता का पालन न करने वाली औरत तो उसकी माँ ही है। ईमानदारी और सत्यवादिता चक्कि से छूट गयी है। पैसा आने से चक्कि के स्वभाव में भी भाव-परिवर्तन दीखने लगा। जो रुपये परीक्कुट्टि से उधार में लिए गए थे उसके बारे में भी चक्कि अब भूल गयी। बेटी के भविष्य के सपने मात्र वह देखने लगी।

समुद्र तट के सभी मछुआरे लोग चेम्पनकुंजु और चक्कि के विरुद्ध खड़े हो गये। लेकिन चेंपन की राय में पड़ोसी लोग ईर्ष्यालु थे। इधर चेम्पनकुंजु की नावें सागर से काफ़ी मछली भरकर लौटने लगीं/ चेम्पनकुंजु की मुख-मुद्रा में गंभीरता छा गयी। नाव किनारे लगते वक्त मिट्टी में खिसकती छोटी-छोटी मछलियों को पकड़ने के लिए अपनी बेटी पंचमी को भी वह आगे नहीं आने देता। चेंपन की नाव से सौदे की मछली सीधे मिलने की जो आशा उनके दोस्तों को थी वह पानी में बह गई। उनमें कुछ लोग चेंपन को शैतान कहकर अपना गुस्सा प्रकट करने लगे।

चेम्पन की आकांक्षाओं की सीमा नहीं रहीं। उसे अमीर घाटवार और उसकी पत्नी को भी आराम की ज़िन्दगी जीने की इच्छा हुई। लेकिन नव दंपत्तियों की हाल-चाल की जो भावना चक्की में उपजी उसे वह मन ही मन छिपा गयी। घाटवार की सुंदर पत्नी के हाव-भाव, एवं सज-धज के बारे में भी चेंपन ने अपनी पत्नी को बता दिया। उनका कहना है चक्कि को थोड़ी मोटी होना है। उसकी दुबली-पतली अवस्था को बदलना वह चाहता है। उसमें सुन्दरता लाना चाहता है। इसके पहले चक्कि ने चेंपन को सुख भोगने की बातें करते कभी नहीं सुना था। पहले वह अपने पति की भावनाओं पर विरोध प्रकट करती रहती थी। पर धीरे-धीरे वह भी अरमानों की दुनिया में आ बसी।

पहले समुद्र-माता की कृपा होनी चाहिए। जब अपनी ज़मीन और घर हो जाएगा और निश्चिंत गुज़ारा करने की स्थिति हो जाएगी तब फिर से बच्चे बनकर सुख से जीवन बिताने की बात करना। तब तक लड़कियों की शादी करके उन्हें भेज देंगे। चेंपन का भी यही विचार था। लेकिन चक्कि ने कहा -

'मैं सुन्दर तो हूँ नहीं। '

चेंपन ने विश्वास दिलाया - 'उस समय तक हो जाओगी।'

'अगर तब तक मैं मर जाऊँ तो?'

'धत्त। अशुभ बात मुँह से न निकालो।'

- यों उस अमंगल भावना पर रोक लगा दी गयी।

एकाएक एक दिन समुद्र का रंग बदल गया। 'पोला' आ गया था। पानी लाल हो गया। समुद्रतट पर फाके के दिन होंगे। हरेक के पास बचत खत्म हो चुकी थी। नाव पर काम करने वाले नाविकों को मालिकों से उधार में रुपये मिलते थे। चेंपन ने नाविकों से कहा - 'तुम लोग भूखे ही रहोगे। पैसा देने का काम मुझसे नहीं होगा।'

रामनकुंजु जो एक और 'जालवाला' है, उसने भी चेम्पनकुंजु से रुपये उधार माँगे। रामन उसी घाट का था। चेंपन ने कुछ समय तक उसकी नाव पर काम भी किया था। बिना किसी हिचक के चेंपन कर्ज़ देने के लिए तैयार हो गया। रामन के चले जाने पर चेंपन चक्कि के पास जाकर पागलों की तरह हँसने लगा - 'छः महीने के अंदर उसकी चीनी नाव मेरी हो जाएगी।' लालच के चलते 'पोला' के समय में भी चेंपन ने मछली मारने को समुद्र में जाना चाहा लेकिन उसके साथ ऐसे खराब समय में मछुआरों ने समुद्र में जाने से साफ-साफ इनकार कर दिया। पर चेंपन ने उन्हें धमकाया कि वह दूसरे लोगों को काँटा डालने के लिए साथ ले जाएगा और बाद में उन्हीं को काम के लिए रखेगा। मज़बूर होकर उन्हें साथ जाना पड़ा। देर रात को एक शार्क मिली। उस दिन कई घरों में चूल्हे जलाए गए।

परीक्कुट्टि की हालत और बिगड़ गयी। अरय जाति के लोगों से भी ज्यादा उसकी हालत खराब हो गयी। रामन को दस-पाँच रुपये चेंपन बीच में दे देता था। पर परीक्कुट्टि से उधार माँगे रुपये लौटा देने की बात नहीं सोची। परीक्कुट्टि 'चाकरा' व्यापार के लिए कोई तैयारी नहीं कर रहा था। उसके बाप ने डेरा ही बन्द कर देने को कहा था। उसका कहना था कि परी समुद्र तट छोड़ दे और कोई दूसरा धंधा शुरु करे। लेकिन परीक्कुट्टि ने साफ कह दिया कि वह ऐसा कर नहीं सकता। उस सागरतट को छोड़कर और कहीं जाने को वह तैयार नहीं था।

परीक्कुट्टि की बुरी हालत से करुतम्मा विचलित हुई। परीक्कुट्टि के साथ प्रेम संबंध तथा अपने ही अनुरोध पर परीक्कुट्टि से रूपए उधार लिए जाने की बात को लेकर माँ-बेटी में झगड़ा होने लगा। करुतम्मा ने माँ पर ज़ोर डाला कि परीक्कुट्टि का पैसा लौटा दिया जाए। बेटी के प्रेम संबंध की बात पिता से न करने की प्रार्थना तो चक्कि ने मान ली। मगर परीक्कुट्टि के रुपये लौटा देने के अनुरोध पर कोई ध्यान नहीं दिया।

'चाकरा' के समय ही मछुआरों की इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है। 'कुजी' के बदले मुट्ठी भी अन्न मिलना, मलमल और महीन कपड़े खरीदना, घरेलू चीजें लाना - आदि इच्छाओं की पूर्ति इसी समय संभव होती है। समुद्र तट पर यह एक पर्व है। चक्कि करुतम्मा के लिए सोने के आभूषण खरीदना और उसकी शादी की बात पक्की करना चाहती है। लेकिन करुतम्मा के मन में परीक्कुट्टि का ऋण चुकाने हेतु पैसा कमाने की अभिलाषा इच्छा मात्र बनकर रह गई। एक सीधी-सादी मल्लाहिन की तरह जीना वह चाहती है। सत्य के संरक्षण से ही समुद्र तट में और मल्लाह के जीवन में समृद्धि आएगी। पंचमी के मन में भी छोटी-छोटी आकांक्षाएँ हैं। परीक्कुट्टि के मन में प्रबल आशा जागने लगी कि इस बार व्यापार में जरूर सफलता मिलेगी। अच्चन कुंजु और नल्लपेण्णु को एक नाव और जाल खरीदने की चाह हुई। समुद्र में तरंगे उठीं। पानी खूब मथा गया। नीर्कुन्नम समुद्र तट पर 'चाकरा' होगी। सब लोग आनन्द से उछल पड़े। सबों के हृदय में इच्छाओं की कलियाँ अंकुरित होने लगीं। समुद्र तट एक शहर बन जाएगा। चाय की दुकानें, कपड़े, दर्जी, सोने-चाँदी सब तरह की दुकानें सज गईं। इस समय 'डायनामा' लगाकर बिजली की बत्ती का इन्तजाम करने की भी सूचना मिली थी।

समुद्र में उथल-पुथल के बाद पानी जब शान्त हो जाएगा तब मछुआरों की समृद्धि का उदय होगा। समुद्र एकदम एक तालाब जैसा शान्त हो गया। दूर-दूर से कई नावें आने लगीं। चेंपन की नाव सबसे पहले समुद्र की ओर गयी। पीछे अन्य सब नावें। पहले दिन मछली कम ही मिली। पानी की स्थिरता देखकर मछलियों ने आना अभी शुरु ही किया था। चेंपन को अधिक मछलियाँ मिलीं। थोक माल लेने वाले व्यापारी लोग इकट्ठे हो गये। परीक्कुट्टि के हाथ में पैसा कम था। फिर भी वह चेंपन की नाव के पास दौड़ा आया। उसने प्रार्थना के स्वर में कहा - 'माल मुझे दो'। चेंपन ने निर्दयतापूर्वक उसकी ओर देखा और पूछा - 'पास पैसा है, नहीं है तो जाओ!'

परीक्कुट्टि निराशा हो गया। समझकर कि चेंपन की नाव की मछली नहीं मिलेगी वह दूसरी नावों की तरफ़ दौड़ा। उसने किसी दूसरे की नाव से एक तिहाई माल मोल लिया। उसके पास उतना ही रुपया था।

चेंपन में अधिक उत्साह उमड़ आया। कमाने का अच्छा अवसर है। खाना खाकर एक और बटोर के लिए वह तैयार हो गया। पास खड़े अच्चन कुंजु ने कहा - 'पैसा मिलेगा, यह सोचकर समुद्र ही खाली कर दोगे क्या? एक ही दिन में दो बार मछली पकड़ने के लिए जाने का कार्य इसके पहले कभी नहीं हुआ था। ऐसा होना भी नहीं चाहिए।' चेंपन ने उनकी बातों पर ध्यान भी नहीं दिया। खाना खाने के बाद वह समुद्र तट पर आ गया। लेकिन सहयात्रियों के न आने के कारण वह समुद्र जा नहीं सका।

उस रात घनघोर वर्षा हुई। दूसरे दिन प्रकाश होने के बाद ही नावें समुद्र में उतरीं। बड़े सबेरे ही नाव न निकलने के कारण चेंपन काम करने वालों पर खूब बिगड़ा। उस दिन भी चेंपन की नाव आगे थी। लेकिन एक और नाव भी तेजी से आगे बढ़ रही थी। पतवार की जगह पर एक बहुत होशियार आदमी खड़ा होकर फुर्ती से नाव का संचालन कर रहा था। पता चला कि वह तृक्कुन्नपुषा की नाव है और 'पलनि' पतवार-चालक है। चेंपन की नाव और पलनि की नाव बराबर-बराबर रहीं। आगे निकल जाने के लिए दोनों में होड़ सी लगी है। बीच में ऐसा सन्देह होने लगा कि चेंपन की नाव ज़रा पीछे पड़ रही है। लौटते समय भी दोनों में होड़ लगी। दोनों का अगला हिस्सा पास-पास आ जाने पर मार-पीट भी हो सकती थी। आखिर नावें किनारे पर लगीं। किसी की न हार हुई न किसी की जीत। चेम्पनने पलनि को गले लगाया और कहा -

'तुम सचमुच सागर के वीर बेटे हो।' पलनि चुप रहा। बिक्री में उस दिन पलनि को थोड़ा अधिक पैसा मिला। पलनि से उसके बारे में जानकारी हासिल की गयी। उसके माँ-बाप मर चुके थे। और वह अकेला था।

घर पहुँचकर चेंपन ने चक्कि से पलनि की होशियारी के बारे में कहा। चक्कि को भी पलनि बहुत पसंद आया।

चेंपन के नाव वालों में जिद्दीपन आ गया। समुद्र तट पर इस प्रकार की ईर्ष्या होती तो वह मार-पीट में ही खतम होती। चेंपन के मना करने के बावजूद भी खूब मार-पीट हो गई। मामला खतम करने के लिए पुलिस की मदद लेनी पड़ी। एक हफ्ते तक मछली पकड़ना बन्द रहा। अब तक की बचत खतम हुई। इसी बीच पलनि की नाव में काम करने वाले छुट्टी लेकर स्वदेश लौटे। पलनि नहीं गया। चेंपन ने पलनि को भेजने के लिए निमंत्रण दिया। पलनि ने निमंत्रण स्वीकार किया। चेंपन के घर में एक बढ़िया भोजन की तैयारी हुई। पलनि को माँ-बाप की याद ही नहीं थी। वह सिर्फ अपने लिए कमाता था। उसके लिए चिन्ता करने वाला कोई नहीं था। जब वह छोटा बच्चा था तभी नियति ने उसे समुद्र में जाल की रस्सी पकड़ने हेतु ला पटका था, जिसमें खतरनाक जल-जीव भरे पड़े थे। जब वह बड़ा हुआ तब नाव जाकर कमाने लगा। पैसा हाथ में आने पर इच्छानुसार खर्च भी किया। उसके मन में भी क्या अभिलाषाएँ भरी थीं। अभी तक किसी ने आग्रह नहीं किया था कि पलनि पेट भर खाए। आज उसके लिए एक घर में माँ खाना तैयार कर रही है। उसने बड़ी प्रसन्नता से भरपेट खाया। उसे कौन-कौन सी सब्जियाँ अच्छी लगीं चक्कि ने समझ लिया और बार-बार परोसकर खिलाया। पलनि को अपनी उम्र का पता नहीं था। एक माँ की तरह चक्कि ने चेतावनी दी - फिजूल खर्च नहीं करना चाहिए। पलनि सिर्फ 'हाँ' बोला। माँ की आत्मीयता से चक्कि ने उपदेश दिया - 'देख-भाल के लिए एक साथी हो। घर होना चाहिए।' उसने मन में तय कर दिया था कि पलनि के लिए करुतम्मा ठीक है। यह सन्देह भी था कि यदि कोई पूछे कि बेटी को कहाँ भेजा, तो क्या उत्तर दिया जाएगा? वह किस जाति का है? पर चेंपन ने दृढ़ निश्चय प्रकट किया - लड़की की शादी पलनि से ही होगी।

लगातार पानी बरस रहा था। नाव नहीं खोली गई थी। डेरों में सुखाई हुई मछलियाँ पड़ी थीं। अधसुखी भी थीं। डेरों की हालत तकलीफदेह थी। परीक्कुट्टि को एक और आफत का सामना करना पड़ा। सेठ जी ने कहला भेजा कि परी का माल उसे नहीं चाहिए। क्योंकि उसका माल काफ़ी सुखाया नहीं गया था।

पलनि के साथ करुतम्मा की शादी की बात पक्की हो गयी। करुत्तम्मा की सहमति से बात बनी नहीं। करुतम्मा ने स्पष्ट रूप से कह दिया कि परीक्कुट्टि का पैसा लौटा देना है। वह बेचारा बड़े संकट में है। चक्कि का भी यही विचार था। परीक्कुट्टि और करुत्तम्मा के प्रेम संबध को चक्कि ने चेंपन से छिपा रखा था।

'उस कर्ज़ को चुकाने के बाद ही....।' आगे की बात करुतम्मा नहीं कह सकी। लेकिन चक्कि समझ गई। चेंपन के पैसे की तिजोरी से करीब पचहत्तर रुपये भी चक्कि ने इस उद्देश्य से चुरा लिये थे कि शादी के पहले ही वह कर्ज़ चुकाएगी। चुराने की बात अगर चेंपन जान गया तो हत्याकांड हो सकता है। एक दिन पूरे पैसे गिनकर हिसाब लिया गया और बक्सा बंद किया गया। चेम्पन को बहुत खुशी इस बात से थी कि पलनि बिना स्त्री-धन (दहेज) लिए ही करुतम्मा से शादी करने को तैयार है। चक्कि ने पूछा - 'उसने न लेने की बात कही होगी, तो भी हमें तो देना ही चाहिए न।'

करुतम्मा ने कहा - मुझे स्त्री-धन नहीं चाहिए। वह पैसा छोटे मालिक परीक्कुट्टि को दे दिया जाए।

शादी हो जाने के बाद पलनि को अपने यहाँ ही रख लेने की इच्छा चेंपन में हुई। बेटे का अभाव तो दूर हो जाएगा। लेकिन चक्कि के मन में शंका उठी - पलनि को यह स्वीकार होगा क्या? करुतम्मा को चेंपन की योजना का पता लग गया था। उसने इस का विरोध प्रकट

किया। बेटी का विरोध देखकर माँ को आश्चर्य हुआ। उसने कहा - जैसे ही तेरे लिए एक मल्लाह के आने के बात उठी, वैसे ही तुझे न माँ की ज़रूरत रही, न बाप की। तू बडी कृतघ्न मालूम होती है।

अपनी बात स्पष्ट करने के लिए करुतम्मा ने कह डाला - मैं यहाँ रहूँगी तो यह समुद्र-तट ही अपवित्र हो जाएगा। बेटी की उक्ति का अर्थ माँ समझ नहीं सकी। एक विजातीय युवक के साथ प्रेम करने के बाद एक और ही व्यक्ति से शादी पक्की की जाने वाली अभागिन औरत की दुख कहानी ही उसने माँ को बताई थी। वह जानना चाहती थी कि उसके - जैसी, किसी अन्य जात के साथ प्रेम करने वाली मल्लाहिन उस तट पर कभी हुई है कि नहीं। चक्कि को बेटी के भग्न-हृदय की वेदना अनुभूत करने में बड़ी कठिनाई न हुई। शादी के दिन ही उसे ससुराल भेजने का उसने वचन दिया।

शादी तय हो जाने पर पड़ोस कि स्त्रियाँ ही वधु को भार्या-धर्म का उपदेश दिया करती हैं। एक पुरूष को रखने की जिम्मेदारी उस पर पड़ने जा रही है। समुद्र की उमडती तरंगों के बीच मर्द के जीवन की रक्षा उसकी औरत पर निर्भर है। पतित नारियों की दुखद कथा भी उस समुद्र तट पर प्रचलित थी। आज कल पुराने ज़माने की शादी और पवित्रता नहीं है। उस पुराने आचार-विचार से लोग कट रहे हैं। लेकिन सागर की बेटियों को अपने चरित्र की रक्षा तो करनी ही है।

करुत्तम्मा ने पड़ोस की छोटी लड़कियों को चेतावनी दी कि हवा में उड़ने वाले सूखे पतों की तरह वे सागर-तट पर विचरण न करें। करुतम्मा का, विदा लेने का समय आ गया। अपने जन्म स्थान को उसे छोड़ना ही होगा। यहाँ की हवा, चाँदनी, प्रकृति, सर्वोपरि अपने प्रेमी की प्यारी - प्यारी मीठी आवाज़। परीक्कुट्टि को भी मालूम है कि अब उसी जगह पर करुतम्मा एक रात के लिए मात्र रहेगी। उसने एक शोक गीत गया। गीत सुनकर, गीत से अभिभूत होने के लिए वह तट पर रखी हुई नाव की ओट में अन्तिम बार जाने को प्रेरित हो उठी। करुतम्मा को परी से बहुत कुछ कहना था। पर उसे डर भी था। हो सकता है कि वह गलती कर बैठे और अपवित्र हो जाए। फिर भी वह घर से बाहर निकली। चाँदनी फैली हुई थी। दोनों की मुलाकात हुई। स्नेह निर्भर विदाई हुई। स्वार्थ विचार लेशमात्र नहीं रहा। एक दूसरे की भलाई का आशीर्वाद लेकर दोनों अलग हो गए।

आखिर विवाह का सुदिन आ गया। चक्कि की इच्छा थी कि शादी धूमधाम से की जाए। सोने के कुछ गहनें बना लेने के कारण चेंपन का थोड़ा पैसा खर्च ही हो गया। इसलिए खूब खर्च करने के लिए वह तैयार नहीं था। घटवार पहुँच गए। तृक्कुन्नप्पुषा से वर के लोग आए। वर पक्ष की तरफ़ से कोई स्त्री नहीं आई है, यह शिकायत की बात रह गई। बहुत वाद-विवाद के बाद रिवाज़ के मुताबिक पचहतर रूपए की रकम देने को वर के लोग सहमत हो गए। शादी की प्राथमिक रस्म पूरी हो गई। ठीक मुहूर्त के समय चक्कि बेहोश हो गई। भोज के समय यह गड़बड़ी हुई। पलनि की जात के बारे में न जानने के कारण कुछ लोग बिना खाना खाये ही चले गए। शादी तो ठीक मुहूर्त में हुई। चेंपन ने अनुरोध किया की पलनि करुतम्मा के साथ उनके यहाँ ही रहे। पर पलनि ने इस का खूब विरोध किया। काफ़ी समय तक वाद-विवाद हुआ। शादी के बाद तो पति के साथ जाना ही धर्म है। माँ-बाप को छोड़कर जाने की बात सोचते ही करुतम्मा रो पड़ी। सब लोग उसके जवाब की प्रतीक्षा कर रहे थे। उसी को बात तय करनी है। चक्कि को आलिंगन करके वह कहने लगी - मैं नहीं जाऊँगी, अम्मा। चक्कि ने डाँटते हुए यह कहकर उसे जाने को बाध्य किया - क्या, तू उस मुसलमान छोकरे को छोड़कर जाना नहीं चाहती? माँ की फटकार सुनते ही उसने पलनि के साथ जाने का विचार बना लिया। चेंपन का चेहरा लाल हो उठा था और रौद्र रूप में बदल गया। करुतम्मा ने चेंपन के दोनों पैर पकड़े। लेकिन चेंपन पैर झाडकर मुँह फेरकर खड़ा हो गया। करुतम्मा कुछ समय वैसी ही पड़ी रहने के बाद उठी। वर पक्ष के साथ विदा लेनेवाली करुतम्मा को देखकर चेंपन गरज़ पड़ा - वह मेरी बेटी नहीं है।

तृक्कुन्नप्पुषा में आ बसने पर करुतम्मा को वहाँ का जीवन कुछ अजीब सा लगा। वहाँ की स्त्रियाँ एकत्र होकर नव वधू के बारे में बातें करने लगीं कि एक जाल वाले ने जिसके पास नावें भी हैं अपनी बेटी को एक ऐसे लड़के के साथ क्यों भेज दिया ? लड़के के पास न कोई घर है, न सगे - संबन्धी ही ?

पड़ोसी औरतों को सन्देह हुआ कि लड़की में कुछ गड़बड़ी है। उनकी बातों पर करुतम्मा ने ध्यान नहीं दिया। उसने एक प्रेमिका के तौर पर नहीं, वरन एक गृहिणी, एक घर की मालकिन के तौर पर अपना जीवन शुरू किया। करुतम्मा पति को चाहने लगी। दोनों ने एक - दूसरे को बहुत कुछ बातें सुनाई। चेंपन के प्रति पलनि के मन में कोई आदर भाव नहीं था। उसका स्वभाव पलनि को अच्छा नहीं लगा। माँ की तारीफ करुतम्मा ने की। एक अच्छी पत्नी होकर रहने का वचन दिया। उसने चाहा कि उसका पति उससे प्यार करे। शादी के दूसरे दिन सुबह पति को नहलाकर ही उसने समुद्र तट पर भेजा। समुद्र में जाने वालों को पवित्र होकर जाना चाहिए। पलनि जब सागर-तट पर पहुँचा तब नाव के मुखिया का पहला सवाल था, 'नहा लिया रे?' शादी के पहले ही करुतम्मा को पड़ोस की औरतों ने ऐसी कई बातें समझा दीं थीं।

एक दिन अप्रत्याशित रूप से खूब मछली मिली। करुतम्मा से कहे बिना पलनि निकट के हरिप्पाड शहर गया। करुतम्मा का मन उदास रहा। खूब मछली या पैसे मिलने से अरय जाति के लोग आलप्पुषा शहर जाकर पैसे फिज़ूल खर्च करते हैं। दो-तीन घण्टे रात बीतने पर पलनि लौटा। उसके हाथ में कागज़ की एक पोटली थी। पोटली में महीन कपड़ा था। पानी पीने के लिए जब घर में बरतन नहीं हैं तब इस कीमती कपड़े की क्या ज़रूरत थी ? लेकिन बाद में करुतम्मा को मालूम हुआ कि जीवन में ज़री का महीन कपड़े भी एक ज़रूरी चीज़ है और जीवन सिर्फ घरेलू बरतन और माल से पूर्ण नहीं होता।

करुतम्मा ने पलनि को एक सुव्यवस्थित जीवन-पद्धति के बारे में समझाया। पलनि ने कहा 'यह विस्तृत जल-राशि ही उसकी संपति है' ।

शादी के बाद माँ-बाप वर-वधू को निमंत्रण देकर न बुलावें तो यह बड़ा अपमान माना जाता है। यह एक रिवाज़ है। मज़ाक में करुतम्मा ने यों कहा - लड़के के यहाँ से संबन्धियों ने बिलकुल निमंत्रण नहीं दिया है। यह वाक्य सुनते पलनि रुष्ट हुआ -'हाँ पलनि के कोई नहीं है। उस के लिए दुखी होने वाला कोई नहीं है। तट पर रहने के अयोग्य एक लडकी थी। उसे पलनि के मत्थे मढ दिया गया। समुद्र में जाकर वह मर भी जाय तो उसके लिए रोने वाला कोई नहीं है।'

'तट पर रहने के योग्य वह नहीं थी' - यह आरोप करुतम्मा कैसे सह सकती थी ? फिर भी उसमें थोडी सच्चाई तो थी ! वह सिसक-सिसक कर रोने लगी। पलनि का मन पिघला। उसने कहा - यहाँ के सभी लोग यह कहते हैं ..... ।

करुतम्मा ने उस पर विश्वास करने को कहा। उसने वचन भी दिया कि वह एक पतिव्रता मल्लाहिन होकर रहेगी। पलनि ने सन्देह प्रकट किया कि करुतम्मा को खुद अपने ऊपर विश्वास नहीं है। करुत्तम्मा के सवालों पर पलनि ने 'ना' या 'हाँ' कुछ नहीं कहा था।

करुतम्मा को लगा कि उस पर एक और वज्रपात हो गया है। उसके रहस्य-प्रेम के बारे में पलनि को कोई सन्देह हो गया है। करुतम्मा के भावुक मन के सामने भीगी आँखें सहित निराश खड़े परीक्कुट्टि की मूर्ति खड़ी हो गयी। आजकल वह पुरानी स्मृति खो गई थी। आज वह मधुर स्मृति ताज़ी हो जाती है। स्वप्न में वह बोली - 'मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।' पलनि ने पूछा - किस से प्रेम करती है? सहसा वह जाग गई और उसने जवाब में एक कच्चा झूठ कह दिया, 'अपने पति को '।

अगले दिन समुद्रतट पर पहुँचने में पलनि को बड़ी देरी हो गई। ऐसा इसके पहले कभी नहीं हुआ था। दोस्तों का मज़ाक पलनि को अच्छा नहीं लगा। वह नाव को आवेश में बढ़ाता

रहा। सब को लगा कि पलनि पर एक भूत सवार हो गया है। क्षितिज की रेखा ही उसकी सीमा है।

कुमारन डर गया और उसने पलनि से कहा, 'तू जाकर मर जा। एक भ्रष्टा को लाकर तुझे डूब मरना ही चाहिए। तेरे भाग्य में वही लिखा है। लेकिन हम लोगों के बाल-बच्चे हैं।' वेलायुधन ने पलनि के हाथ से पतवार ले ली और नाव को घुमा दिया।

शादी के बाद चौथे दिन रिवाज के मुताबिक वर-वधू दोनों को बुला ले जाना चाहिए। लेकिन बुलावा नहीं आया। क्यों नहीं बुलाया गया - यह सवाल दोनों सागर तट के लोगों ने करना शुरू कर दिया। न बुलाने का यही कारण हो सकता है कि करुतम्मा पतित हो गई है। लोगों ने उसे घर से बाहर कर दिया है। अपनी बेटी को घर बुला लेने की बात चेंपन को अच्छी नहीं लगी। कारण पूछने वालों से वह झगड़ा करने लगा। उसने बेटी को त्याग दिया है। चक्कि ने करुतम्मा की शादी के दिन से ही खाट पकड़ ली थी। उसके बाद उठी ही नहीं। बीमार पत्नी की ओर चेंपन ने कोई ध्यान नहीं दिया। इसलिए परीक्कुट्टि को बुलाकर चक्कि ने अपना दुःखड़ा बता दिया। यह भी बता दिया कि परीक्कुट्टि को करुतम्मा का सगा भाई होकर रहना है। - 'बेटा तुम्हें उससे प्रेम था। लेकिन अब उसे बहन समझना'।

चेंपन को अपनी नाव पर पतवार थामने में दिलचस्पी न रही। कई दिन बाद उसको नाव पर जाते देखा। पहले - जैसी तेज़ी नहीं थी। एक बार पतवार फिसलने से वह पानी में गिरा भी था। उस दिन चेंपन बीमार पडी चक्कि के पास खाट पर बैठ गया। वह एक हारे हुए व्यक्ति की तरह बैठा था। चक्कि ने अपनी बिगड़ती तबीयत के बारे में बता दिया और इस प्रकार सांत्वना भी दे दी कि 'किसी दूसरी से शादी कर लेना।' इतना कह चुकने पर चक्कि की छाती की घड़कन धीमी पड़ने लगी और धीर-धीरे एकदम बन्द हो गयी।

माँ की मृत्यु की खबर तक बेटी को न देने का हठ करने लगा चेंपन। चेंपन के विचार में करुतम्मा ही चक्कि की अकालमृत्यु का कारण थी। करुतम्मा और चक्कि के सामने अपने को दोषी न ठहराने के लिए परीक्कुट्टि पलनि के घर पहूँचा। 'पलनि की स्त्री की माँ मर गई है।' परीक्कुट्टि ने एक मछुआरे को बताया। लेकिन पलनि के घर की राह बताने वाले उस मछुआरे ने एक उलझन भरा सवाल पूछ लिया - मरने की खबर लेकर तुम कैसे आए? वहाँ कोई मल्लाह नहीं मिला क्या'? चक्कि मरने के बाद का समाचार परी ने करुतम्मा को कह सुनाया। सुनते ही वह रोने लगी। पलनि ज़रा पहले ही लौट आया। रोती हुई करुतम्मा की तरफ़ पलनि ने ध्यान भी नहीं दिया। उसका मन बिलकुल विचलित नहीं हुआ।

एक मल्लाहिन के मरने की खबर देने के लिए एक मुसलमान के आने के कारण पलनि के यारों ने उससे सन्देह प्रकट किया। पलनि को नाव पर आने नहीं दिया। पलनि चिंतामग्न हो गया। आखिर सब कुछ कह डालने के लिए करुतम्मा तैयार हो गई, वह पति से अपनी प्रेम कहानी सुनाने लगी। सब सुन चुकने के बाद पलनि ने कहा - 'तब तो लोगों को यह कहना कि उन लोगों ने तुम्हें नीर्क्कुन्नम तट पर से दूर कर दिया है, सच ही है।'

परीक्कुट्टि के जाने के बाद करुत्तम्मा के जीवन में बहुत कुछ फेर-बदल आ गया पलनि नाव में जा नहीं सका। टोकरी खरीदकर मछली बेचने चली करुतम्मा को पड़ोसिनों ने भला-बुरा सुनाया। फलतः उसने मछली बेचने जाने का काम छोड़ दिया।

करुतम्मा गर्भवति हो गई। एक कमरा और रसोईघर वाले मकान बनाने की चाह उसे हुई। इसी विचार के बीच में ही आकस्मिक घटनाएँ उत्पन्न हुई। पर पलनि हारने को तैयार नहीं था। 'समुद्र में जो कुछ भी है, वह सब मेरा भी है' - पलनि का मन अपने अधिकार - बोध से भर गया। करुत्तम्मा को भी आश्वासन दिया। लेकिन एक बात ज़रूरी है कि करुतम्मा को अपनी मर्यादा का पालन करना होगा। करुतम्मा की बचत से बारह रूपए लेकर और उसके सोने का गहना बेचकर पलनि ने काँटा और एक छोटी नाव खरीदी। पति-पत्नी के

जीवन में ज़रा तसल्ली हुई। कुछ दिन बाद करुत्तम्मा ने एक बच्ची को जन्म दिया। माँ बन जाने पर उसे अपनी बहन की याद आई। उसे पता चला कि उसके पिता चेंपन ने दूसरी शादी की है। बहिन पंचमी के करुण जीवन के बारे में सोचते वक्त उसके मन में अपार दुःख का अनुभव होने लगा। पर पति पलनि ने उसे अपने मायके जाने की अनुमति नहीं दी। ज़ालिया कंडन कोरन की मृत्यु हुई। उसकी पत्नी को ही चेंपन घर ले आया। पाप्पी के एक बड़े बेटे थे गंगादत्त। एक नये पति की ज़रूरत पाप्पी को नहीं थी। लेकिन अब उसकी पारिवारिक स्थिति अच्छी नहीं थी इसलिए जीने के उपाय हेतु वह चेंपन के यहाँ आई। गुज़ारे लायक संपति बच गई होती तो वह ऐसा कभी नहीं करती।

पंचमी ने पाप्पी का सम्मान नहीं किया। अनामंत्रित मेहमान की तरह पाप्पी को वह देखने लगी। छोटी माँ को समझती ही नहीं थी। पाप्पी ने जब पंचमी के नटखटपन के बारे में सुनाया तो चेंपन ने गुस्से में बेटी को दो थप्पड़ लगा दिए। पड़ोसिन नल्लपेण्णु दौड़ी आई और पंचमी को अपने घर ले गई। पाप्पी को दोषी भी ठहराया गया। 'यह भी अपनी बड़ी बहन जैसी ही होगी। किसी मुसलमान छोकरे के साथ लग जाएगी' - पाप्पी के कथन सुनकर चेंपन के मस्तिष्क में बिजली कौंध आई।

चेंपन को कहानी स्पष्ट मालूम होने लगी। परीक्कुट्टि का पैसा लौटा देने की व्यग्रता ! चक्कि ने भी उसकी मदद की होगी। - चेंपन पर एक पागलपन सवार हो गया।

उसने दौड़कर नल्लपेण्णु के यहाँ खड़ी पंचमी को खूब पीटा। वह पंचमी से पूछता जाता था कि क्या वह मुसलमान के साथ जाएगी ? उस दिन चेंपन को चक्कि के शव - संस्कार की जगह को खोदते हुए देखा गया। कुछ दिन बाद उसका पागलपन उतर गया।

चेंपन की दोनों नावों में मरम्मत की ज़रूरत थी। बिना मरम्मत के वे काम के लायक नहीं बनी। जाल भी बेकार हो गए। कर्ज़ लेकर नाव तथा जाल की मरम्मत करने का उसने निश्चय किया। ऋण ली हुई रकम से कुछ रुपए चुराकर पाप्पी ने बेटे गंगादत को दिए। जब चेंपन को यह रहस्य मालूम हो गया तब गरजकर पाप्पी को घर से मार भगाया। आखिर घटवार के यहाँ समझौता हो गया।

पाप्पी चेम्पन के ही घर लौट आई। दूसरे दिन पंचमी वहाँ दिखाई नहीं पड़ी। परीक्कुट्टि की रकम लौटा देने का विचार लिए हुए चेंपन उसके निवास-स्थान की ओर गया। 595 रूपये देने के पहले उसने कहा - 'यह है तेरा ऋण। मुझे बरबाद करने के लिए, मेरी बच्ची को पथ - भ्रष्ट करने के उददेश्य से, तुम ने जो पैसा दिया था, ले, वह वापिस ले।' चेंपन चला गया और अपनी नाव के पास खड़े होकर उसे ज़ोर की हँसी आ गयी।

पंचमी तृक्कुन्नपुषा में आ गयी। वह बहन करुतम्मा की झोंपड़ी में ठहरने लगी। घर में एक काली छाया फैल गयी। घर का वातावरण कुछ गंभीर होने लगा। पलनि के समुद्र जाने के बाद दोनों ने अपने पूर्वकाल जीवन का खूब स्मरण किया। 'कोच्चुमातलाली मेरी बात अब भी तुमसे पूछता था' - करुतम्मा के भावुक प्रश्न का उत्तर पलनि ने ही दिया - 'हाँ पूछता था।' करुतम्मा के प्रेम-नाटक का रहस्य खुल गया। लेकिन पलनि के प्रश्नों के उत्तर देने में करुतम्मा में अब एक मज़बूती आ गई। विवाह पूर्व प्रेम-संबन्ध रखने के किसी दोष का अनुभव उसको नहीं हुआ था। एक सच्चे व निश्छल प्रेमी के रूप में परीक्कुट्टि उसको प्रिय ही था।

उस दिन भी रोज़ की तरह पलनि समुद्र गया। उसकी नाव उस अनन्त जल-राशि में दक्खिन की ओर बढ़ी। वह उमंग में डाँड चला रहा था। लगता था कि उधर कहीं एक भँवर है। उसकी वजह से समुद्र की तह के खिंचाव से बचने का प्रयत्न वह करने लगा। बीच में एक शार्क को पकडने के लिए पलनि ने काँटा डाला।

वह रात करुतम्मा को भी अजीब सी लगी। उसे नींद नहीं आई। चिरपरिचित स्वर में 'करुतम्मा' - पुकारने की आवाज़ सुनाई दी। पलनि ही समुद्र से आकर उसे रात मे यों पुकारता है। इस बार दरवाज़ा खोलने के लिए नहीं कहा गया। फिर भी करुतम्मा दरवाज़ा

खोलकर बाहर आ गई। हवा चल रही है। वह समुद तट की ओर चली। स्वच्छ चाँदनी में वहाँ परीक्कुट्टि खड़ा था।

परीक्कुट्टि पहले के जैसा नहीं था। बहुत थका हुआ था। करुतम्मा को लगा - 'मेरे कारण इस पुरूष का सवर्नाश हो गया' ।

अब दोनों को डर नहीं लगा। कुछ ही क्षण में वह अपने जीवन की सब विफलताएँ भूल गई। दोनों एक दूसरे को चाहने वाले। प्रेम की तीव्रता में परी ने पुकारा - 'मेरी करुतम्मा' अर्धचेतनावस्था में करुतम्मा ने जवाब दिया। फिर दोनों एक हो गए। उस गाढ़ आलिंगन से अलग होने की शक्ति उनमें नहीं थी।

दूर समुद्र में उस बड़े शार्क ने पलनि की नाव को भँवर की और खींचा। समुद्र की स्थिति क्षुब्ध हो गई। मेघ का भयानक गर्जन हुआ। ज़ोर से बिजली कड़की। नाव भँवर में डूब जाने को हुई तो पलनि चिल्लाया - 'करुतम्मा' । अब वही मल्लाह की रक्षा कर सकती है। मगर वह अपनी मर्यादा खो चुकी थी। पलनि की नाव एक क्षण उल्टी हुई दिखाई पड़ी और फिर डूब गयी।

उस रात को आँधी, तूफान, बिजली, मेघगर्जन सब के एक साथ मिलने से संहार का काम पूरा हो गया। दूसरे की सुबह शान्त थी। करुतम्मा दिखाई नहीं दी। पलनि भी नहीं लौटा। पंचमी तट पर उस बच्ची को गोद में लिए खड़ी-खड़ी रो रही थी और बच्ची माँ-बाप के लिए चीख-पुकार मचाये हुये थी। दो दिन के बाद आलिंगन बद्ध स्त्री और पुरूष के मृतशरीर वहाँ किनारे लग गए। वे करुतम्मा और परीक्कुट्टि के शरीर थे। कुछ दूर पर 'चेरियषिक्कल' समुद्र तट पर काँटा निगला हुआ एक शार्क भी किनारे लगा था।

एक असाधारण प्रेम-कहानी यों समाप्त होती है।

3.4 कथानक

साधारणतया उपन्यास का सार आदि से अन्त तक की घटनाओं के क्रमिक विवरण द्वारा दिया जाता है। लेकिन घटनाओं का विवरण मात्र कभी उपन्यास नहीं होता। लबोक पेर्सी ने कहा है कि उपन्यासकार का दायित्व जीवन का कथोपकथन मात्र नहीं है बल्कि उसको अनुभवयोग्य बनाना है। मतलब यही कि उपन्यास के लिए कथानक के साथ अनेकानेक घटनाओं का सम्मिश्रण होता है। ई. एम. फास्टर ने कहा है कि घटनाओं के क्रम में परिवर्तन लाना उपन्यास की रसनीयता के लिए आवश्यक है। मलयालम के उपन्यासकारों ने प्रारंभिक काल से इसी रीति का अनुकरण करके उपन्यासों की सरसता को बनाए रखा है। प्रारंभ काल की रचनाएँ होते हुए भी ओ.चन्तुमेनाने की इन्दुलेखा और सी.वी.रामन पिल्लै की मार्ताण्डवर्मा नामक औपन्यासिक रचनाएँ इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। उपन्यास में कथानक इस प्रकार रहे कि अद्‌भुत रस के द्वारा पाठक को आकर्षित कर सकें। आसाधारण घटनाएँ हों। कथानक के लिए आद्यान्त भविष्य कथा की सूचनाएँ हो, ताकि वे कथा के अन्त में ही सामने आंएँ। कथापात्रों से संबधित होने पर ही घटनाएँ स्थाई बन सकेंगी। इसलिए घटनाओं के आधारभूत और नियामक कथापात्र ही आवश्यक हैं। इन सारी बातों को समायोजित करते हुए विख्यात समीक्षक एम.पी. पोल ने लिखा है- 'उपन्यास ऐसी एक गद्य रचना है जो मनुष्य के भाव विचारों को प्रकाशित करने योग्य एंव संभाव्य कथानक के विवरण द्वारा काव्यानुभूति की सृष्टि करती है। '

चेम्मीन एक असाधारण प्रेम कहानी है। विशेष प्रकार के कथापात्र, अपूर्व घटनाएँ एंव परिस्थितियाँ, मिथक, समूह मन आदि एक मिलकर यह असाधारण प्रेम कहानी बनती है। कथानक के केन्द्र में कथाकार ने करुत्तम्मा एंव परीक्कुट्टि के प्रेम को प्रतिष्ठापित किया है। एक ऐसा प्रेम जो सामाजिक आचार विचारों की परवाह नहीं करता है। अरय स्त्री करुतम्मा और चतुर्थ वेदानुयायी (इस्लाम) परी कुट्टी के बीच का प्रेम। दो

धर्मविश्वासियों का प्रेम जिनके बीच वैवाहिक संबन्ध स्वीकार्य नहीं होता। फिर भी, खास बात यही है कि दोनों दिल से दृढ़तापूर्वक प्रेम करते हैं। करुतम्मा एवं परीक्कुट्टि के बाल्य की सूचना दी जाती है तो भी प्रथम अध्याय का आरंभ उनके विशुद्ध की मधुरिमा से भरी जवानी का चित्र खींचते हुए है। नीरकुन्नम के प्रशान्त एवं भावपूर्ण सागर की पृष्ठभूमि में उनके लिए योग्य निवासस्थान को उपन्यासकार ने ढूँढ़ निकाला है। अठारह बरस की उमर तक समुद्र के साथ खिलखिलाते और परीक्कुट्टि से रसभरी बातें करते रहने वाली करुतम्मा को उपन्यास के प्रथम अध्याय में प्रस्तुत करते हुए भी उसकी जीवन-गाथा को आच्छादित रखने की प्रतिभाशक्ति तकर्षि ने दिखायी है। करुतम्मा के पिता चेम्पनकुंजु, माँ चक्कि, छोटी बहन पंचमी आदि कथापात्रों की सहायता लेकर उपन्यासकार ने ऐसा किया है। करुतम्मा ने परीक्कुट्टि से उपालंभ किया, रूठने का अभिनय किया, क्योंकि उसने अपने शरीर पर आँखें लगायी थी। खिलखिलाते हुए उसने यह भी कहा कि पिता मछली जाल और नाव खरीदने जा रहे हैं, लेकिन पैसे की कमी थी। किसी भी गरीब अरय की यही आशा थी कि अपनी एक नाव और जाल हो जाए। उस तथ्य को समझनेवाली करुतम्मा ने परीक्कुट्टि से खेल-खेल में उधार माँगा। उसकी प्रतिक्रिया थी - मछली दोगी तो उधार दूँगा। करुतम्मा ने उत्तर दिया योग्य दाम दोंगे तो मछली दूँगी। यह संवाद उनके भविष्य जीवन को नष्ट करने वाला सत्य बन गया।

अरय की जीवन-शैली को नियंत्रण में रखनेवाली एक मिथक है। उसे तकषि ने प्रथम अध्याय में जोड़ दिया है। पंचमी ने अम्मा को सूचना दी कि दीदी, 'छोटे मियाँ' से खिलखिलाती बतियाती रहती है। उस प्रसंग को लेकर चक्कि ने अरय-जीवन को नियंत्रित करनेवाली मिथक बेटी को सुनायी। उस मिथक के अनुसार स्त्री की चरित्र शुद्धि का मूल्य जीवन है - इस तथ्य को प्रत्येक माता अपनी बेटी को सुनाती है। इसे पुरूष भी जानता है। लहरों एवं जल धाराओं से होड़ करते हुए अरय जब सागर की गहराइयों में जाता है तो उसकी पत्नी को व्रतशुचिता का पालन कर तट पर तप करना होता है। तभी पुरूष निरापद लौट आएगा। पत्नी का व्रत टूट जाता है तो वह सजीव लौटता नहीं है। करुतम्मा के प्रेम को और मिथक को प्रथम अध्याय में निवेशित करते हुए उन्यास की संपूर्णता को तकषि ने मिथक की सूचिका से बांधे रखा है।

धनराशि के प्रति चेम्पनकुंजु का अदम्य लालच, बेटी के भविष्य पर आशंकित होते हुए भी माता चक्कि की सुख लोलुपता आदि को प्रारंभ ही में तकषि ने व्यक्त किया है। ये दोनो रीतियाँ करुतम्मा के जीवन के निर्णायक घटक हैं। सूक्ष्मता से देखने पर कथानक को आगे ले जाने वाला घटक चेंपनकुंजु को पैसे का लालच है। नाव खरीदने और नाव को जल में उतारने की साज सज्जाओं के लिए वह परीक्कुट्टि से उधार लेता है। लेकिन चेंपनकुंजु को इस तथ्य की जानकारी अन्त में हो जाती है कि करुतम्मा के प्रेम के कारण पैसे दिये गये थे। समुद्रतट पर अनेक लोग इस की चर्चा करते रहते थे। यह चर्चा चेम्पनकुंजु के कानों नहीं पड़ी- यहाँ स्वाभाविकता है। बच्चों के समान सुखी जीवन बिताना है - इस महामोह से भरे मन में दूसरा कोई प्रवेश नहीं पा सकता है। चक्कि ने पूर्व सूचना दी थी 'छोकरी किसी' 'म्लेच्छ ' के साथ भाग जाएगी। इस संदर्भ में उस म्लेच्छ को परीक्कुट्टि समझने योग्य वातावरण की सृष्टि की गयी है। लेकिन चेंपनकुंजु ने उनकी अनुसनी की। कथानक की प्रगति की स्वाभाविकता को लक्ष्य कर ऐसा किया गया है। चक्कि की इच्छा के अनुसार करुतम्मा को दृढ वैवाहिक संबन्ध प्राप्त हो जाता तो कथानक की तीव्रता नष्ट हो जाती। करुतम्मा के प्रेम संबन्ध को दुःखान्त अथवा त्रासदी बनाने के लिए जान बूझकर लेखक ने चेम्पनकुंजु, चक्कि आदि की मनोदशाओं की सृष्टि की।

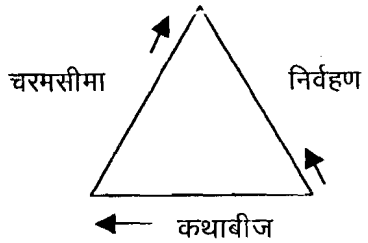

फ्रेटग के पिरामिड के अनुरूप कथाबीज को चरम सीमा तक विकसित कर निर्वहण पर पहूँचाने की रीति का तकषि ने अनुसरण नहीं किया है। प्रेम कहानी मुख्य वर्ण्य विषय है जिसकी दो चरम सीमाएँ हैं। नवम अध्याय में करुत्तम्मा, परीक्कुट्टि से विदा लेती है जो प्रथम चरमसीमा है। इतना भावोज्वल चित्रण मलयालम साहित्य में दूसरा नहीं है। चेम्पनकुंजु ने दो नावें खरीदीं, फिर भी परीक्कुट्टि का कर्ज़ नहीं चुकाया। कर्ज़ा लेने की याद तक उसमें शेष नहीं थी। भंडार नष्ट हुआ जिससे हाथ खाली, प्रेमसंबन्ध टूट गया जिसमें आशाओं पर पानी फिर गया, सब कुछ नष्ट कर सागर तट पर भटकनेवाले प्रेमी की दुर्दशा करुत्तम्मा को सहन नहीं थी, वह उसकी सहायता कर न सकी, उसको आश्वस्त न कर सकी। वह सोचती है कि इस दुर्दशा के लिए वह ही जिम्मेदार है। इसकी चिंता उसका दम घुटाती है और वह परीक्कुट्टि से विदा लेती है। यह चिन्ता उसकी जान लेने लगती है। इसी प्रतीक्षा से वह विदा लेती है कि मृत्यु के पश्चात् दोनों आत्माएँ समुद्र तट की चाँदनी में उड़ती फिरेंगी। उस विदाई के दृश्य में अरय नारी की चरित्र शुद्धि की संकल्पना उभरती है। गले से गला मिलाकर, आँसू बहा-बहाकर प्रेमियों के बिछुड़ने के दृश्य साहित्य में अनेक हैं। पतिव्रता की शरीर शुचिता को संरक्षित करने के लिए तकषि ने उन दोनों को एक हाथ की दूरी पर रख दिया। परीक्कुट्टि को मन में प्रतिष्ठापित करते हुए भी वह इसी मनोबल के आधार पर अपनी माता और अपने पति से कहती है - 'मैं गिरी नहीं हूँ।'

दूसरी चरमसीमा तब आती है जब अन्तिम दो अध्यायों में करुत्तम्मा और पलनि का संवन्ध टूटता है। अब तक उसको दिए विश्वास को बनाये रखने का वह मन से परिश्रम करती है। लेकिन, तब दुरन्त वार्ताओं का भाण्ड लेकर पंचमी लौट आती है तो तृक्कुन्नपुषा के मानव जीवन में भारी विस्फोट होता है। माता की मृत्यु के बाद पिता ने दूसरा संबन्ध जोड़ा, उसने पिता का धन चुराकर अपने पुत्र को दिया। पिता ने उसकी पिटाई की, पिताजी पागल बन गये, आदि बातें उस तक पहुँची। करुतम्मा पूछती है - 'छोटे मियाँ कभी मेरी याद करते हैं ? इसका उत्तर पलनि देता है तो दूसरी चरम सीमा शुरू होती है। करुत्तम्मा ने तब तक जिस विश्वास को हँसते-रोते, प्यार एंव विवाद करते हुए बनाये रखने का प्रयास किया था वह एक ही पल में चकनाचूर हो गया। वह दृश्य एकदम संघर्षपूर्ण एवं नाटकीय है। घटना प्रधान कथानक का आवश्यक गुण है नाटकीयता। उसको उन्नीसवें अध्याय में निबन्धित किया है। जो शेष रह जाता है, वह उसका निर्वहण है।

दूसरी श्रेणी के कथापात्रों में मुख्य चेम्पनकुंजु को केन्द्रबिन्दु बनाकर कथानक का मुख्य मार्गान्तर शुरू होता है। परीक्कुट्टि के कर्ज़ चुकाने की बात को वह जान बूझकर टाल देता है। युवकों के समान मदमस्त रहना, नई शादी के अनुभवों से सुखी रहना, आदि स्वार्थ मोह ही उस के लिए सब कुछ है। पलनि के साथ करुतम्मा का विवाह संपन्न करना अपने रास्ते को साफ करने के लिए था। अपार मछली संपदा प्राप्त होने पर भी परीक्कुट्टि का स्वागत करती है। अपने ही कारण वह बर्बाद हुआ, इसलिए उसके मन में सहानुभूति से मिश्रित प्रेम भर आया। ऊपर से पलनि का अविश्वास। इन कारणों ने उसे अन्तिम समागम की प्रेरणा दी। उस समागम दृश्य का बीज चेंपन कुंजु की लालच से भरी मनोवृति में तकषि ने छिपा रखा है।

चेम्पनकुंजु की कथा में दुःखान्त की दो चरमसीमाएँ हैं। एक उसका ही दुःखान्तजीवन और दूसरे उसकी पुत्री का दुःःखान्तजीवन। एक दुःखान्त को दूसरे के कारण के रूप में संबन्धित किया है। चक्कि की मृत्यु, दूसरी पत्नी की स्वार्थता, उसके द्वारा की गयी चोरी, करुत्तम्मा

के पतन की जानकारी, आदि को तकषि ने चेम्पनकुंजु को गिराने का जाल बनाया है। जब उसको मालूम हुआ कि करुतम्मा से प्रभावित होकर ही परीक्कुट्टि ने धन दिया था तो उसको वापस करने का इरादा मन में किया। इस ज्ञान को उपन्यास के अन्तिम भाग तक ले जाकर तकषि उसको एक शक्तिशाली दुःखान्त प्रदान करने में सफल हुए।

चेम्मीन इसका एक उत्तम उदाहरण है कि जब सभी सूक्ष्मताओं को अवधानतापूर्वक समायोचित कर कथानक का संगठन किया जाता है उपन्यास अतीव शक्तिशाली एवं आह्लादकारी बन जाता है। प्रथम अध्याय में सहजता से फूट निकलनेवाला तालमेल और परिणाम अन्तिम अध्याय में परिलक्षित होता है। एक ही सिक्के के दो पक्षों के समान वे मिले-जुले रहते हैं। यहीं पर प्रथम अध्याय की मिथक का अर्थ अभिव्यक्त होता है। वास्तविक जीवन में मिथक उतना प्रभावशाली नहीं है तो भी उसका परिपालन अभिकाम्य है। इसका सन्देश बीसवें अध्याय में है। उसके समानान्तर एक और बात भी है। मनुष्य के जन्म जात भावों से सर्वसाधारण और अति तीव्र रतिभाव की अनन्तविचित्रताओं की अभिव्यक्ति । शक्तिशाली और विशिष्ट मनोदशावाले कथापात्रों की सृष्टि करते हुए मिथक की शक्ति के तिरस्कार की क्षमता दिखायी गयी है। सामान्य रूप से समझा जाता है कि करुत्तम्मा का नाम लेते हुए भँवर में फँसे पलनि को बचाने के लिए तपस्यालीन अरय स्त्री की मिथक पर कथानक आधारित है। लेकिन चेम्मीन का कथानक इसके ठीक उल्टा है जिसमें विलोमी विचिन्तन के अनेक अवसर उपलब्ध कराये गये हैं। करुतम्मा के ज़रिये एक नये मिथक की तकषि ने सृष्टि की है जिस के अनुसार सहज रतिभाव की शक्ति को स्थायी बनाया गया है और उसके सफलीकरण के लिए सर्वस्व को त्यागने की रीति बतायी गयी है। प्रतिभा के धनी ही मिथकों की सृष्टि कर सकते हैं। इसलिए चेम्मीन की रचना के द्वारा तकषि को विश्वविख्यात उपन्यासकारों की पंक्ति में बैठने की योग्यता मिली। उसकी कलापूर्णता एवं सुन्दरता के कारण ही वह विश्व की सभी प्रमुख भाषाओं में अनूदित हुआ है।

3.5 पात्र सृष्टि

उपन्यास का स्वरूप इतना स्वच्छन्द है कि उसमें जीवन का समग्र चित्रण साध्य हो सका। उपन्यासकार को रचना का सीमा निर्धारण बाधक नहीं है। कथानक, क्रियाओं का प्रबन्धन हो तो कथापात्र उसके कर्ता हैं। उनकी सृष्टि को सफल बनाने के लिए उपन्यासकार को मानवजीवन का सूक्ष्य निरीक्षक और जीवन - सत्यों का अन्वेषक बनना होगा। उस अन्वेषण की नियंत्रक शक्ति के अंग हैं लेखक का व्यक्तित्व और मानवता का अवबोध। लेखक के लिए उपन्यास से बढ़कर दूसरा माध्यम नहीं है जिस के द्वारा अपने व्यक्तित्व की सत्यतापूर्ण, प्रौढ़ एवं विश्वास्यपूर्ण प्रस्तुति हो सके। मानव जीवन को सत्यता से एवं समग्रता से चित्रित करने की सशक्त विधा भी उपन्यास है। सभी भाषाओं के सभी उत्कृष्ट उपन्यासकारों ने इसका प्रयोग किया है। मलयालम की बात भी इससे भिन्न नहीं है। सी.वी. रामन पिल्लै, ओ.चन्तुमेनोन, पी.केशवदेव, तकषि, बशीर, पोट्टेक्काट, उरूब जैसे अनेक प्रतिभाधनी उपन्यासकारों ने मानव-जीवन की सत्यतापूर्ण एवं समग्र अभिव्यक्ति की है।

उपन्यास में अनेक प्रकार के कथापात्र होते हैं। उन्हें दो भागों में बाँट सकते हैं जैसे पूर्ण कथापात्र और अपूर्ण कथापात्र। उपन्यास की कथा के मुख्य व्यक्ति ही पूर्ण कथा पात्र हैं। केन्द्र कथा की सहज प्रगति और परिणति के लिए अप्रधान कशापात्रों की आवश्यकता पड़ती है। उनकी कथा का पूर्ण विवरण आवश्यक नहीं है।

तकषि को कुट्टनाड का कथाकार कहा जाता है। वहाँ के मनुष्यों के प्रतीकस्वरूप अनेक पात्रों की सृष्टि उन्होंने की। एणिप्पड़िकल, चेम्मीन, कयर आदि उपन्यास कुट्टनाड के धरातल पर रचे गये हैं। एणिप्पडिकल में सरकारी कर्मचारी गण, चेम्मीन में अरय जात के लोग और कयर में केरलीय समाज कथापात्र बन कर आते हैं।

पात्रसृष्टि में तकषि का दृष्टिकोण प्रेमकल्पना में परिवर्तित होता है। त्याग का फल, पतितपंकज, परमार्थ आदि प्रारंभकालीन उपन्यासों में वासना (lust) पर आधारित स्त्री-पुरूष संबन्ध को स्थान दिया है। चेम्मीन में उसे उन्होंने उदात्त प्रेम (love) परिवर्तित किया है।

उस काल में तकषि ने जब कहानी लिखना शुरू किया था तब केरल में साम्यवाद का प्रचार द्रुत गति से हो रहा था। सामंत सभ्यता के अन्तिम कड़ी बन कर रहने वाले राजाओं एवं ज़मीन्दारों की कथाएँ प्रारंभिक रचनाओं में बतायी गयीं। लेकिन क्रान्तिकारी विचार धारा ने उन्हें यह समझने को बाध्य किया कि गरीबों, भिखारियों एंव पतित जनों की भी अपनी कथाएँ होती हैं। समाज के निचले तबके के लोगों को नायक एवं कथापात्र बनाने की धीरता साहित्यकारों ने दिखायी। तकषि नामक उपन्यासकार ने निचले तबके के लोगों को केन्द्र बिन्दु बनाकर अनेक उपन्यासो एवं कहानियों की रचना की। इस प्रकार के कथापात्र रंडिडंगषि, तोटिटपुटे मकन, चेम्मीन आदि उपन्यासों में प्रत्यक्ष होते हैं।

पात्रसृष्टि की दृष्टि से चेम्मीन की एक विशिष्टता है। रंडिडंगषि एवं तोटिटयुडे मकन नामक उपन्यासों में समाज नीति पर बल दिया गया तो चेम्मीन में व्यक्ति मन की विचित्रता को स्थान दिया है। स्त्री-पुरूष संबन्ध के खुरदरे भौतिक तल की अपेक्षा इसमें तकषि ने सूक्ष्म मानसिक तल को प्रस्तुत किया है।

विद्यार्थी एवं कर्मचारी के रूप में सागर तटवर्ती स्थानों में रहने का अवसर तकषि को प्राप्त हुआ है। सागर के साथ मछुआरों का संघर्ष, कठिन परिश्रम के बावजूद सहचारी बननेवाली गरीबी, उनकी आचार रीतियाँ, अशिक्षित होने के कारण सामने आनेवाली शोषण नीति आदि का तकषि ने प्रत्यक्ष दर्शन किया है। चेम्मीन के अप्रधान कथापात्र तकषि के सामने प्रत्यक्ष हुए मछुआरों के प्रतीक हैं। मच्छीघाट का अरय (मुखिया) परीक्कुट्टि, अच्चनकुंजु, नल्ल पेण्णु, पंचमी आदि पात्र किसी भी सागर तट पर दिखायी देने वाले हैं। लेकिन मुख्य पात्रों की बात कुछ अलग है। वे पात्र चेम्मीन को एक उत्तम रचना का स्वरूप देते हैं।

3.5.1 परीक्कुट्टि

चेम्मीन दुःखान्त कथा का नायक है परीक्कुट्टि। तकषि दृढतापूर्वक मानते थे कि कथापात्र चलते-फिरते सहज मनुष्य हों। इसका मतलब यही कि जीवन की परिस्थितियों में प्रकट होनेवाली सहजता उसमें हो। चेम्मीन के ही नहीं, तकषि की सभी रचनाओं के कथापात्र इस प्रकार के हैं; दिन प्रतिदिन सामने दिखाई देनेवाले मनुष्यों के समान सहज एवं सरल।

परीक्कुट्टि का जन्म नीर्कुन्नम के सागर तट प्रदेश में नहीं हुआ था। उसका ख्वाबा रु उसी प्रदेश का झींगा व्यापारी था। बाबा की हथेलियों में झूलकर बचपन ही में तट प्रदेश में पहुँचा था। उसी दिन उसे करूत्तम्म से एक भेंट मिली थी - सागर तट से चुनकर सुरक्षित रखा गया एक बड़ा गुलाबी शंख। उस स्नेह-प्रकटन के पश्चात् दोनों उसी तट प्रदेश में मित्रता से रहे और बड़े हुए। फिर उनके मैत्री बंध में प्यार का नया रंग चढ़ा। लेकिन परीक्कुट्टि ने कभी अरय स्त्रियों के रीति-रिवाज़ एवं तमीज़ को तोड़ने की प्रेरणा नहीं दी। नाव की छाँव में बैठकर बहुत कुछ हँसते थे, जिसमें दूसरों को हँसी नहीं आती थी। इसबीच, एक दिन उसने पूछा - नाव और जाल खरीदने का पैसा दोगे ? पिताजी की बातों को सुनकर ही उसने यह माँग की थी; उसमें प्रेम का स्वर नहीं था; एक साधारण वाक्य। लेकिन उस वाक्य ने परीक्कुट्टि के ही नहीं दूर प्रदेश तृक्कुन्नप्पुषा के पलनि के जीवन को भी बदल डाला। करुतम्मा का परिवार शिथिल हुआ। परीक्कुट्टि एवं करुतम्मा के जीवन टूट गये। सर्वत्र दुरन्त फैलने लगा।

वह प्रश्न दुरन्त का बीज था। उस प्रश्न की प्रेरणा स्त्रोत परीक्कुट्टि का प्यार भरा हृदय था। लैला-मजनू के मजनू के समान, उसका एकमात्र ध्येय प्यार था। उसके प्रमाण स्वरूप जब-जब चेम्पनकुंजु ने चाहा तब-तब उसने पैसे दिये। नाव खरीदी गयी जब अच्छी 'पकड़' मिली, उसका माल परीक्कुट्टि को न बेचकर उसने धोखा दिया। उसकी परवाह किये बिना परीक्कुट्टि ने अपने भंडार की सूखी मछलियाँ चेम्पनकुंजु को दे दीं जिससे दूसरी नाव

खरीदी गयी। 'चाकरा' के मौसम में असीम धन - राशि मिली तो भी उसने परीक्कुट्टि के पैसे वापस नहीं दिये। परीक्कुट्टि चकना चूर हो गया। तब 'चाकरा' के सिलसिले में आये पलनि के साथ अपनी प्रेयसी के विवाह बन्ध पक्का करने की बात मालूम हुई। उनके भावोज्वल विदाई के समय परीक्कुट्टि ने कहा - तृक्कुन्नप्पुषा में रहनेवाली करुतम्मा की याद में नीर्कुन्नम में बैठकर गाते गाते मैं जान दे दूँगा। प्रेम के लिए प्रेमवाली धारण को दृढ करने वाला मुहूर्त।

करुतम्मा जब पलनि के साथ गयी तो अस्वस्थता से चक्कि गिर पड़ी। तब उसने परीक्कुट्टि को बुला भेजकर अनेक दुःख भरी बातें बतायी और चेम्पनकुंजु की लालच की शिकायत की। उसके बाद उसने यह माँग की कि उसे करुतम्मा को बहन मानना चाहिए। चक्कि की मृत्यु की खबर देने गया। चतुर्थवेदी (इस्लाम) जब मृत्यु की खबर देने गया तो करुतम्मा के जीवन में समस्याएँ बढ़ी। तृक्कुन्नपुषा के लोगों ने अफवाहें फैलायीं। पलनि अपनी पत्नी पर शक करने लगा। 'गिरी नारी के पति पर विपदा आ पड़ती है -' इस विश्वास से प्रेरित होकर कोई भी पलनि को अपनी नाव में ले जाना नहीं चाहता था। पलनि अकेले छोटी नौका में काँटे में मछली फाँसने जाता था। समस्याएँ बढ़ी। तब भी करुतम्मा एक धर्मनिष्ठ पत्नी बनकर रही। करुतम्मा की छोटी बहन पंचमी ने आकर 'छोटे मियाँ' की कष्ट-दशाएँ बतायी तो करुतम्मा ने पूछा - छोटे मियाँ कभी मेरी याद करते हैं? पलनि ने यह प्रश्न सुना तो उसका सन्तुलन नष्ट हुआ। वह अपनी पत्नी के विश्वास को समझने की कोशिश कर रहा था। गुस्से में आकर पलनि अपनी छोटी नौका लेकर समुद्र में गया। उसी रात को परीक्कुट्टि ने आकर करुतम्मा को बुलाया। उस आश्रय हीन पुरूष को, जो अपनी ही कारण सभी प्रकार से चकनाचूर हो गया था, एक पल का आश्वास प्रदान करना चाहा, करुतम्मा के अन्दर की प्रेमिका ने। वह, बाकी सब भूल गयी। समुद्र में गये पलनि को भी भूल गयी। चाँदनी बिछी वह रात कालीरात बनी। परीक्कुट्टि का बुलावा स्वीकार कर करुतम्मा उसके साथ चली। दो दिन बाद सागर तट पर उनके शव दिखाई पड़े।

करुतम्मा एवं परीक्कुट्टि के प्रेम सम्बन्ध में अपूर्व कल्पना शक्ति एवं चारूता है। इसी दशा में परीक्कुट्टि साधारण पुरूष एवं नायक बन जाता है। लगता है एक साधारण व्यक्ति, दूसरों के ही समान; लेकिन सबसे भिन्न है। अपनी प्यारी प्रेयसी दूसरे की पत्नी बनी, माता बनी। तब भी उसके प्रति जो मनोदशा थी, उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। यही अपूर्वता है। करुतम्मा के ही कारण परीक्कुट्टि की अजीविका, जीवन पारिवारिक संबन्ध सब नष्ट हुए यही साधारण धारणा हो सकती है। लेकिन इस असाधारण नायक के मन में ऐसी धारणा नहीं थी। वे दोनों, विशेषकर परीक्कुट्टि चाहता था कि जीवन में साथ-साथ मिलन न हो पाए तो मृत्यु के बाद हो जाए। धन,कर्ज़, घाटा, चेम्पनकुंजु का धोखा - इन में से एक भी उसके लिए समस्या नहीं। सभी भौतिक परिवेश में वह प्रेमी था केवल एक प्रेमी।

करुतम्मा के परिचय से प्रेरित होकर परीक्कुट्टि ने पैसे दिये यह जानकारी जब प्राप्त हुई तब चेम्पनकुंजु ने कर्ज़ चुकाना चाहा। तब तक वह परीक्कुट्टि से कहा करता था कि 'जब पैसा तब व्यापार।' यह वाक्य सुनकर चुपचाप पराजित-सा परीक्कुट्टि लौट जाता था। उसका एक ही कारण था - करुतम्मा के प्रति प्यार। पागल बनकर निराधार प्रेतात्मा की तरह तट प्रदेश में भटकनेवाला चेम्पनकुंजु, कुछ परीक्कुट्टि के हाथों थमा देता है। तब उसने सोचा हो कि इस पैसे से जीवन दुबारा हरा-भरा बन जाएगा, तो वह परीक्कुट्टि बन नहीं पाता। उसके लिए प्रेम ही सबसे मूल्यवान है। दूसरे दिन उसने करुतम्मा से मिलना चाहा। इस प्रकार के अपूर्व भावाविष्कार के मुहूर्त में उपन्यासकार सफलता प्राप्त करता है।

सब ऐसा सोचते हैं कि प्रेम का साक्षात्कार विवाह में है। परीक्कुट्टि विवाह की सोचता तक नहीं। इसलिए घर छोड़कर भागने की बात भी नहीं। जैसे जीवन की पूर्णता मृत्यु में है वैसे यहाँ प्रेम, मृत्यु से पूर्ण हो जाता है। परीक्कुट्टि के ज़रिये तकषि ने अपूर्व प्रमानुभूति को अभिव्यक्त किया है। यह कथापात्र व्यक्त कर देता है कि तकषि का प्रेम दर्शन असाधारण है।

3.5.2 करुतम्मा

मलयालम उपन्यास शाखा में करुतम्मा जैसी नायिका दूसरी नहीं है। एक अपूर्व नायिका नीर्कुन्नम तट प्रदेश में जन्मी-पत्नी एक साधारण मछुआरिन। लेकिन उसके प्रेम ने उसे एक असाधारण नायिका का पद दिया। वह चेम्पनकुंजु और चक्कि की बड़ी पुत्री थी। उसका प्रारंभिक जीवन, तट पर उड़ते-फिरते रहने वाले एक सूखे पते के समान था। बाल्यकाल के स्वतंत्र जीवन के समय वह परीक्कुट्टि से परिचित हुई। वह उसको अच्छा लगा जिसकी प्रतिक्रिया के रूप में उसने अपना गुलाबीशंख उसको भेंट किया। बाद की कहानी से यह व्यक्त हो जाता है कि वह शंख उसके जीवन का और उसके दिल का प्रतीक था। जवानी के दिनों में उस शंख के स्थान पर दिल आ गया। बंधन बढ़े। करुतम्मा को लगा कि बड़ी होना नहीं चाहिए था। हँसने, बोलने, देखने आदि सब में मनाही आ गयी। साथ साथ मछुआरिन की 'रीति नीति' की संकल्पना। यह विश्वास किया जाता था कि समुद्र में गये पुरूष का जीवन तट पर रहने वाली स्त्री की विशुद्धि पर टिका है। इस विश्वास ने उसका दम घुटाया। व्रत भंग हुआ तो एक व्यक्ति नहीं सारा गाँव मिट जाएगा। करुतम्मा उस नाश का कारण बनना नहीं चाहती थी। नाव और जाल खरीदने पर पिता को मिलनेवाला आनन्द, परीक्कुट्टि के सूक्ष्म निरीक्षण का अर्थ - दोनों की सम्मिश्रित मनोदशा में उसने परीक्कुट्टि से कुछ पैसे उधार माँगे। उपन्यास का प्रारंभ इसी वार्तालाप से होता है। सच्चाई और मज़ाक को उस वार्तालाप से अलग-अलग नहीं किया जा सकता था। 'मछली दोगी?' परीक्कुट्टि के इस प्रश्न का उत्तर हँसते हुए करुतम्मा ने दिया - 'अच्छा दाम मिले तो दूँगी।' इस वाक्य को पढ़ने पर ऐसा लगेगा कि जवानी की प्रेरणा से कहा गया खिलवाड़ । लेकिन तषकि ने अपने उपन्यास के आद्यन्त को इस छोटे वाक्य में छिपा रखा है।

तट प्रदेश की मिथक को मानकर करुतम्मा, पलनि की पत्नी बनी। यह कहते हुए वह तृक्कन्नपुषा चली गयी कि मृत्यु के बाद साथ मिलेंगे। अपने शब्द सार्थक बन गये तो अस्वस्थ बनी। व्यापार के शिथिल हो जाने पर मारा-मारा फिरनेवाला छोटा मियाँ उसके मन की नित्य वेदना बन गया। पतिव्रता बन कर रहने का उसने निश्चय कर लिया। चेम्पनकुंजु की बातों को टाल कर वह पलनि के साथ गयी तो उसका लक्ष्य शील संरक्षण था। उसके बीच जो चहल-पहल हुई और चक्कि गिर पड़ी तो चक्कि भी उसको पलनि के साथ चाहती थी। परीक्कुट्टि के पैसे वापस करने के लिए करुतम्मा एवं चक्कि दोनों ने मिल कर चेंपनकुंजु की पेटी खोलकर चोरी की थी। फिर भी, वे कर्ज़ चुका न पायी।

दोनों प्रदेशों के लोगों के बीच वार्ताएँ चली कि नाव एवं जाल का स्वामी अपनी बेटी को पलनि जैसे एक अनाथ के हाथों सौपना चाहता है तो उनके पीछे कोई रहस्य हो सकता है। उन बातों की परवाह किये बिना एक जिम्मेदार एवं स्नेहमयी पत्नी बनकर रहने का उसने निश्चय किया। उसके साथ कोई भी स्त्री नहीं चली थी, कुछ पुरूषों के साथ वह पलनि के घर पहुँची थी। चौथे दिन दावत का बुलावा देने के लिए दुल्हन के घर से कोई नहीं आया। ये दोनों बातें जब साथ-साथ मिल गयीं तो पलनि के प्रदेशवालों ने निर्णय कर लिया कि तट प्रदेश के लिए अयोग्य एक लड़की को एक अनाथ के हाथों थमाकर उस तट प्रदेश के सत्यनाश के लिए भेज दिया है। उसके बाद जितनी भी बातें हुई, सब की सब करुतम्मा के विरोध में थी। वह मछली बेच न सकी। दूसरी मछुआरिनों ने अफवाह फैलायी कि वह पुरूषों को अपनी ओर आकृष्ट कर व्यापार को सुगम बनाती है। चक्कि की मृत्यु की खबर देने के लिए परीक्कुट्टि पहुँचा तो उसके विरोध में पलनि को नावों में ले जाने पर रोक लगी। वे दोनों तिरस्कृत होने लगे। इस बीच उसने अनुभव किया कि पलनि का प्यार ढीला पड़ता जा रहा है। लेकिन वह धीर रही, क्योंकि वह गिरी नहीं थी। इसका मतलब यही कि परीक्कुट्टि के साथ उसका शारीरिक संबन्ध नहीं हुआ था। हर समाज नारी की परिशुद्धि का निर्णय इसी आधार पर करता है। जैसे-जैसे करुतम्मा अपने विश्वास को दृढ करना चाहती थी वैसे वैसे पलनि पूछता रहता था कि तुम अपने पर भी भरोसा नहीं कर सकती हो। उस वाक्य ने उसके मन को जला दिया। पलनि का दृढविश्वास था कि करुतम्मा के पीछे कहानी है। उसने उसके बारे में पूछताछ की। पैसे के लेन-देन, गीत की वश्यता, अन्तिम विदाई आदि को छिपा

कर बाकी सारी कथाएँ उसने सुनायी और उसने वचन दिया कि तट प्रदेश की लायक मछुआरिन बनकर जीवन बिताएगी। पलनि ने करुतम्मा पर विश्वास किया ; फिर भी उसके मन में एक काला धब्बा शेष रह गया कि उसको नीर्कुन्नम से निकाला गया था।

एक बच्ची जनी तो उनके जीवन की गति बदल गयी। आज जीवन का एक लक्ष्य है। बच्ची का पालन पोषण करना है। बगैर किसी संघर्ष के जीवन चलता रहा तो सौतेली माँ से झगडा कर छोटी बहन पंचमी वहाँ पहुँची। उसकी उपस्थिति पलनि को अच्छी न लगी। उनके अनिच्छित कार्यो की याद दिलानेवाली उपस्थिति। पलनि को जिसका डर था वही हुआ। इधर उधर की बातें करते करते करुतम्मा और पंचमी का वार्तालाप परीक्कुट्टि तक जा पहूँचा। करुत्तम्मा और आकांक्षा को दमित नहीं कर सकी कि छोटे मियाँ उसकी याद करता है या नहीं। उस प्रश्न का उत्तर देने वाला पलनि था। सारे आच्छादन हट जाते हैं। वह सोचने लगती है कि शादी के पहले किसी से प्यार किया तो इस में क्या गलती है? यह जानकर कि करुतम्मा के मन में अब भी परीक्कुट्टि जी रहा है, पलनि भावाविष्ट होकर सागर में नाव खेने चला गया। करुतम्मा तट पर तपोलीन नहीं रही, परीक्कुट्टि की स्मृति में लीन रही। झकझोरने वाला तूफान और भारी वर्षा जैसे करुत्तम्मा और पलनि की मनोदशा के प्रतीक हो।

रात बीत गयी तो परीक्कुट्टि वहाँ पहुँचा जैसे करुत्तम्मा ने अपने मन से उसे आवाहित किया हो। उसने आवाज़ दी तो करुतम्मा बाहर निकली। उसके बाद उनका समागम हुआ, जो लंबे काल से दोनों चाहते थे। उस समय करुत्तम्मा के मन में न पलनि था, न बच्ची थी, और न छोटी बहन थी। उसको यह पता भी नहीं लगा कि सागर में गया मच्छुआरा तूफान एवं भँवर में फँसकर सुरक्षा के लिए करुतम्मा को बुला रहा था और पराजित होकर भँवर में डूब गया था। इस धारणा को उसने मूल्यवान नहीं समझा कि पुरूष को एक स्त्री के हाथों सौंपा जाता है। उससे बढ़ कर उसने अपने प्रेम को अधिक मूल्यवान समझा। जो सफलता उसे जीवन में प्राप्त नहीं हुई उसे मृत्यु के ज़रिये प्राप्त किया।

तकषि ने सागर तट की एक साधारण स्त्री के मन में प्यार भर दिया और उसे एक आसाधारण नारी बना दिया। करुत्तम्मा में अनेक प्रकार के गुण हैं जैसे सत्य, नीति, विश्वास, उत्तरदायित्व भाव, सहोदर स्नेह, चिन्तन शक्ति, युक्ति विचार आदि। परीक्कुट्टि को प्राणों से भी अधिक प्यारा माना तो भी उसमें मछुआरिन की 'रीति नीति' को सुरक्षित रखने का नैतिक मनोभाव था। तब भी तृक्कुन्नप्पुषा के लोगों ने उसे गिरी हुई मानकर पीड़ा दी। करुतम्मा ने यह प्रश्न किया किया क्या तुम लोग उतनी पवित्र हो? तपोलीन मछुआरिन' की मिथक को भी पूर्ण रूप से वह स्वीकार कर न सकी। उसमें यह युक्ति मौजूद थी कि तट प्रदेश में ऐसी स्त्रियाँ नहीं है जिन्होंने व्रत भंग न किया हो। उसको यह सत्य भी मालूम था कि तट प्रदेश की कोई स्त्री किसी पुरूष को प्यार करे तो सागर, तट पर चढ़ आएगा और तट प्रदेश नष्ट हो जाएगा। फिर भी उसने उस विश्वास की निन्दा न कर उसका अनुसरण किया। तकषि ने साबित किया कि प्राणी सहज यौन प्रेरणा का काल्पनिक नाम है प्रेम। अति शक्तिशाली उस प्रेरणा को दबान की शक्ति नैतिक विचार, संस्थापित पत्नी धर्म, प्रत्युत्पादन किया आदि में नहीं है। करुत्तम्मा एवं परीक्कुट्टि की किया ने यही सिद्ध किया। जातिगत आचारों के नाम पर बिछुड जाने और दो वर्षो तक अपरिचित जैसे रहने पर भी बढती रही उनकी मनोदशा उनके प्रेम को कल्पना का परिवेश देती है।

करुतम्मा के पात्र चित्रण में स्त्री के अधिकार और आवश्यकताएँ प्रत्यक्ष लक्ष्य क रूप में परिलक्षित नहीं होते हौ। फिर भी उसके व्यक्तित्व की समझदारी के रूप में उसके विचार को व्यक्त किया गया है कि अपराध कुछ भी न करने पर समाज उसको दण्डित कर रहा है 'विवाह के पहले मैंने एक पुरूष से प्यार किया। उसमें दोष क्या है'? यह प्रश्न वैयक्तिक स्वतंत्रय बोध का प्रकटीकरण है। इस प्रकार की दुर्घटनाओं का दायित्व उस समाज का है जो जाति - धर्म के परे होकर जीने को तैयार होने वालों को जीने नहीं देता है। नवजात नन्ही बच्ची पंचमी आदि भविष्य दुर्घटना के सूचकों के रूप में बच जाती हैं। पात्र सृष्टि में तकषि की असामान्य क्षमता को व्यक्त् करनेवाली है करुतम्मा।

3.5.3 पलनि

नब्बे प्रतिशत उपन्यासों में 'त्रिकोण प्रेम' पाया जाता है। यह अतिपुरातन समस्या है। इसलिए उसके चित्रण को उपन्यासकार की प्रतिभा का निकष माना जाता है। चेम्मीन का पलनि साधारण खलनायक नहीं है। वह जान बूझकर परीक्कुट्टि और करुतम्मा के प्रेम संबन्ध में बाधा नहीं डालता है। अनजाने में वह खलनायक बन जाता है।

वह एक अनाथ था जो तृक्कुन्नपुषा तट प्रदेश में पला था। बड़ा हुआ तो काम किया, मन भर खाया, सोया। एक शक्तिशाली मच्छुवारा बन गया। स्वच्छंद, किसी के प्रति किसी भी प्रकार का दायित्व नहीं। उसको चाहनेवाला कोई नहीं था। पलनि 'चाकरा' के काल में नीर्कुन्नम तट प्रदेश आ पहूँचा।

नीर्कुन्नम का शक्तिशाली और दक्ष मच्छुआरा था चेम्पनकुंजु। उसकी अपनी नाव थी। उस गर्व भाव को लेकर खेवैया बनकर आगे निकलने वाले चेम्पनकुंजु को पीछे करने की शक्ति केवल एक व्यक्ति में थी और वह व्यक्ति था पलनि। उस शक्तिशाली युवक को अपनी नाव तक पहुँचाने के प्रयत्न को सरल बनाने के लिए पलनि को अपनी पुत्री का पति बनाया। चेम्पनकुंजु का विश्वास था कि अनाथ होने के कारण पलनि घर ज़माई बनकर रहेगा। उसकी सारी प्रतीक्षाओं पर पानी फेरते हुए विवाह के ही दिवस में वह पत्नी को साथ लेकर अपने घर चला गया। पलनि पत्थर जैसा दृढ था तो भी पत्नी उसको अच्छी लगी। चाकरा पकड़ के लिए गया तो पलनि ने कभी न सोचा था कि शादीशुदा होकर लौटेगा। वह शान्त और प्रेमी पति के रूप में बदल गया। पत्नी को खाना परोसकर देने का सद्भाव उसमें था। पहले दिन करुतम्मा से कहा कि उसके पिता को वह नहीं चाहता है।

करुतम्मा और पलनि के जीवन में प्रदेश के लोग दखल देने लगे। लोग यह शंका प्रकट करने लगे कि नाव एवं जाल के स्वामी और धनी मच्छुआरे ने अपनी बेटी को एक अनाथ के हाथों क्यों सौंपा? अंत में वे इस निर्णय पर पहूँचे कि लड़की में कोई खोट होगा। लेकिन करुतम्मा के पक्ष से कोई अपराधी व्यवहार हुआ भी नहीं। इस बीच में परीक्कुट्टि की कथा भी वहाँ पहूँचायी गयी। फिर लोगों के चिन्तन- विचिन्तन के फलस्वरूप पलनि को नाव में ले जाना विपदापूर्ण है। पलनि के कानों तक बातें पहूँचने लगी। एक दिन उसके मित्र उसको अलग कर नाव लेकर चले गये। पलनि एक दम टूट गया। घर पहूँचकर पलनि ने करुतम्मा को खूब डाँटा - डपटा, लेकिन उसे दोषी न ठहराया। उसका विश्वास था कि वह गिरी नहीं है। 'आगे हम कैसे जिएँगे?' - करुतम्मा का यह प्रश्न सुनकर उसका पौरूष जागा। ' मैं सागर जाने योग्य नहीं हूँ - ऐसा कहने का अधिकार किसका है ? मैं सागर में जन्मा हूँ, सागर में जो कुछ है, सब मेरा है। पलनि की यही प्रतिकिया थी।

उसके बाद अकेले, छोटी नाव में सागर में काँटे से मछली पकड़ता था। उसने करुत्तम्मा से यह भी कहा कि 'रीति नीति' से चलने पर वह उसकी मछुआरिन बनकर रह सकती है। पंचमी और करुत्तम्मा के बीच छोटे मियाँ पर हुए वार्तालाप को सुनकर पलनि का मन अस्वस्थ हुआ। उस बिन्दु पर उनके जीवन में दिशान्तर होकर जीवन दो दिशाओं में चलने लगा। करुतम्मा के मन में छिपे परीक्कुट्टि को जब पलनि ने प्रत्यक्ष देखा तो करुतम्मा को लगा कि अब कुछ भी छिपाने को नहीं है। यह मानने के लिए करुतम्मा अपने मन में शक्ति संजोने लगी कि प्रेमकथा सच्ची है। पलनि में जीवन और मृत्यु का संघर्ष चला, वह रुष्ट हुआ। यह मनोभाव लेते हुए वह सागर की दूरी तक नाव खेते गया कि पत्नी अपने पति को चाहती हो तो पतिव्रति मछुआरिन रहकर उसकी रक्षा करे। उसी रात को तूफान और भारी वर्षा हुई। पलनि एक भारी तिमि (शार्क) के पीछे चलकर भँवर में फँस गया। वह 'करुतम्मा, करुतम्मा' चिल्लाता रहा। लेकिन वह अपने प्रेमी के साथ मिलकर प्रथम और अन्तिम समागम में लीन थी। दो दिनों के बाद दो प्रेमियों के शवों के साथ एक तिमि का मृत शरीर भी तट पर लगा, लेकिन पलनि का कुछ पता न लगा।

पलनि अनाथ होकर भी स्वाभिमानी था, अशिक्षित होकर भी अधिकारों का जानकार, पत्थर - दिलवाला था तो भी स्नेहधनी था, धोखे के प्रति असहिष्णु था। परम्परागत खलनायक

संकल्पना से भिन्न व्यक्तिवाला पात्र। जब विलोमी परिस्थितियाँ उसे दण्ड देती हैं, तो सहानुभूति होती है। एक साधारण मच्छुवारे से जिन-जिन अच्छाइयों की अपेक्षा कर सकते हैं, वे सब उसमें मौजूद थीं। धोखा देने ही के कारण हुई मनोवेदना और हठधर्मिता के अलावा और कोई बुराई उसमें नही थी। एक पति के लिए आवश्यक परिपक्वता, सहिष्णुता एवं आत्मधैर्य उसमें मौजूद था। परीक्कुट्टि जैसा एक नायक कहीं भी दर्शित हो सकता है। लेकिन पलनि जैसा खलनायक अन्यत्र पाया नहीं जा सकता है। अपनी मिथक की सार्थकता के लिए तकषि द्वारा रूपायित एक अपूर्व कथापात्र है पलनि।

3.5.4 चेम्पनकुंजु

उपन्यास के प्रारंभ में करुतम्मा के शब्दों में तकषि चेम्पनकुंजु को प्रस्तुत करते हैं। अपनी एक नाव और जाल - इसी आशा को मन में थामे हर मच्छुआरा दूसरों की नाव में काम करने जाता है। चेम्पनकुंजु के मन की आशा अदम्य थी। परीक्कुट्टि से उधार लेकर उसने अपनी आशा की पूर्ति की। जब एक नाव हाथ में आयी तो वह लालची बन गया। दूसरी नाव अपनाने की आशा को भी उसने सफल किया। उसकी इच्छा यहाँ तक बढी कि नन्हे बच्चों की तरह सुखी रहना है। इसलिए परीक्कुट्टि का कर्ज़ न चुकाया। इतना ही नहीं वह परीक्कुट्टि के सर्वनाश का कारण बना। नाव भर मछली लेकर वह तट पर पहूँचा तो वह शैतान बन गया। नीचे गिरी मछली चुनने के लिए उसकी छोटी पुत्री पंचमी पहूँची तो उसने उसे धकेल दिया। मछली खरीदने के लिए जब परीक्कुट्टि उसके निकट गया तो उसने कहा - 'पैसा हो तो मछली दूँगा। चक्कि की सहेली मछुआरिनों को भी मछली नहीं दी।

पैसे की प्यास से ही उसने पलनि को अपनी पुत्री का पति बनाया था। पलनि को उसने कुछ न दिया। इतना ही नहीं प्रदेश मर्यादा का उल्लंघन कर उसने भारी रकम 'दुल्हिन शुल्क' के रूप में माँगी और शादी के दिन झगड़े की परिस्थिति बनाई। इसे सुनकर चक्कि बेहोश हो गिर पड़ी। पलनि को घर जमाई बनाने की आशा असफल बनी तो पति के साथ जाने को उद्यत पुत्री को तिरस्कृत किया। चौथे दिवस की दावत के लिए उन्हें बुलावा न देकर उसने प्रतिकार किया। चक्कि का स्वास्थ्य गिरा तो सुख भोगने का मोह टूट गया। पत्नी की मृत्यु के बाद उसने दूसरी शादी की तो भी सुख दूर ही रहा। सौतली माँ के प्रति पंचमी की नफरत, अपने पुत्र के लिए दूसरी पत्नी द्वारा पैसे की चोरी आदि से चेम्पनकुंजु पागल सा बन गया। पागल की तरह उसने परीक्कुट्टि के हाथों कुछ रूपये थमा दिये और समुद्र तट पर घूमता रहा। चेम्मीन उपन्यास में जितनी भी दुर्घटनाएँ घटती हैं, सब उसके लालच की वजह से।

दूसरी श्रेणी के कथापात्रों में प्रमुख है चेम्पनकुंजु। उस पात्र को प्रधान कथापात्रों की पूर्णता एंव उज्वलता दी गयी है। उसकी दुर्गति को भी उपन्यास की प्रधान घटना के रूप में जोड़ा गया है। चेंपनकुंजु ऐसा एक साधारण मच्छुवारा नहीं है जो काम करता है, ताड़ी पीता है और पत्नी को पीटता है। उसकी सबसे बडी संपदा उसकी इच्छाशक्ति है। इसी इच्छाशक्ति से प्रेरित होकर वह मच्छुआरा अपनी नाव एवं जाल खरीद लेता है जबकि दूसरे मछुवारे उसका सपना मात्र देखते रहते हैं । त्रासदी नायके के लिए आवश्यक कमज़ोरी को दृष्टि में रखकर तकषि ने उसे लालची बनाया। उसके लालच ने ही उसके दुरन्त का जाल बिछाया। तटीय प्रदेश के जीवन का अत्यपूर्व प्रतीक है चेंपनकुंजु नामक पात्र।

3.5.5 चक्कि

दूसरी श्रेणी के पात्र चक्कि का महत्व नायिका करुत्तम्मा की माँ मात्र के रूप में नहीं है। उपन्यास के प्रथम अध्याय से तेरहवें अध्याय तक अपनी सजीव उपस्थिति से तथा बाद के बीसवें अध्यायों में एक अपूर्व आत्मीयता की उपस्थिति से इस पात्र का दर्शन होता है। लालच और स्वार्थ की पूर्ति करके 'चेम्मीन' को एक दुरनत कथा का रूप देने वाले चेम्पनकुंजु की पत्नी है चक्कि। मल्लाह की असली संपति मल्लहिन की पवित्रता ही है - 'प्रस्तुत जीवन-सिद्धांत प्रथम अध्याय में ही चक्कि बेटी करुतम्मा को बताती हुई उपन्यास में

प्रवेश करती है। पवित्रता का पालन वह करती भी है। वह पति परायण और सती साध्वी स्त्री है। मालिक बनने की इच्छा में व्यग्र चेंपन के जीवन से न जुड़ जाए तो समुद्रतट के साधारण मल्लाहिन के जीवन निर्वाह कर वह गुज़र ही जाएगी। चेंपन की पत्नी के पद ने उसके जीवन को संघर्षपूर्ण तथा असाधारण बना दिया।

सुख-लोलुपता का आग्रह ही चेंपन के जीवन को नियंत्रित करनेवाला तत्व रहा। घटवार और उसकी पत्नी का सुखी जीवन चेंपन के सामने था। बुढापे में भी वे सुख भोगते हैं। पति-पत्नी बच्चें की तरह हैं। चेंपने ने चक्कि को प्रलोभन दिया। इसी प्रेरणा से परीक्कुट्टि से कर्ज़ लेने तथा उसके डेरे से सूखी मछलियाँ खरीदकर बेचने को वह तैयार होती है। वास्तव में करुतम्मा के पूछने पर ही परीक्कुट्टि धन कर्ज़ देने को राज़ी हो गए। इस निर्णय के मूल विचार से चक्कि भली भाँति परिचित थी। परी का कर्ज़दार बनना ठीक नहीं था। शीघ्रातिशीघ्र बेटी की शादी कराकर वह भेज देना चाहती है। चक्कि ने अपने पति से यों भी कहा - कोई विधर्मी बेटी को ले जाएगा। 'बेटिया, तुझे अपनी मर्यादा की रक्षा करनी है।' - कहकर सीधे जाने वाले पिता चेंपन शायद चक्कि के कथन का मूल समझ गया होगा।

फिर भी वह इस्लाम परीक्कुट्टि का कर्ज़दार बनता गया। चाकरा के आने के बाद भी, परीक्कुट्टि के ऋण चुकाने का मन चेंपन को नहीं हुआ तो चक्कि को कर्ज़दार बनाने की गहराई महसूस होने लगी। पत्नी के वास्ते वह अब निस्सहाय बन चुकी थी। चेंपन की इच्छाओं के सामने वह असमर्थ हो गई। उसे मालूम था कि करुतम्मा के कथन में तथ्य है। बेटी के हठ तथ परीक्कुट्टि के पतन के कारण चक्कि पति के पैसे के बक्से से कुछ रूपए चुरा लेने को भी तैयार होती है। पड़ोसियों से जो सौहार्द बनाया रखा था वह भी टूट गया। करुतम्मा के बारे में पड़ोसिनो ने जो बुरी बाते बता दी उससे वह तंग आ गयी। पति को अफवाहों के बारे में सूचित करने से डरती थी। चेंपन के अमीर बन जाने से चक्कि के जीवन में भी अधिकार अनुशासन स्वतः शिथिलता आने लगी।

सयानी बेटी को घर में रखकर नाव और जाल खरीदना, परीक्कुट्टि का कर्ज़ न चुकाना, अनाथ पलनि के साथ करुतम्मा की शादी कराना आदि बातों पर चक्कि ने अपना विरोध तो पहले ही प्रकट किया था। फिर भी अपने विचारों पर अडिग रहने की हिम्मत उसको नहीं थी। समुद्र से धन बटोरनेवाले पुरुष के अधिकार तो मानना मल्लाहिन का धर्म नहीं। इसीलिए वह पति के व्यवहारों के अनुकूल रही। भूखी रहती थी वह। टोकरी भर मछली बेचती थी। अब सुख भोगने का जो प्रलोभन चेंपन ने दिया उसे ठुकराना वह चाहती नहीं।

करुतम्मा से संबन्धित बातें निकट के समुद्रतट के लोगों ने भी जान लीं। चक्कि दुःखी रही। विवाह के दिन किसी ने कहा - 'इस समुद्रतट का सर्वनाश न होने के लिए ही करुतम्मा को दूसरे तट पर भेज दिया गया है।' यह सुनते ही चक्कि बेहोश होकर गिर पड़ी। शादी के मुहूर्त भर संघर्ष बना रहा। चक्कि और बीमार पड़ी। खाट पर पड़ी माँ को छोड़कर पति के साथ जाने वाली करुतम्मा की उपेक्षा की गई। चेंपन ने गरज कर यह भी कहा - 'वह मेरी बेटी नहीं है।' पर चक्कि ने आशीर्वाद दिया। विवाह के दिन रूग्ण अवस्था में भी मातृ सुलभ स्नेह के कारण पुत्री को ससुराल जाने की अनुमति वह देती है।

शादी के बाद चौथे दिन वर - वधू दोनों को दावत पर बुला लेना चाहिए। लेकिन ऐसा नहीं हुआ जिससे चक्कि क्षोभ और दुख के कारण अधिक बेहोश हो गई। बेटी के दांपत्य जीवन में आनेवाली अमंगल घटनाओं का संकेत माँ को अनुभूत हुआ। उसकी बीमारी बढ़ती गई। माँ के पास जाने की भी अनुमति नहीं थीं करुतम्मा को। परीक्कुट्टि को देनेवाला धन वापस न दे सकी। यह चिंता भी चक्कि को सताने लगी। उसने एक दिन परीक्कुट्टि को घर बुलाकर अपनी व्यथा - कथा सुनाई। ' परी तुम करुतम्मा के भाई हो। तुम्हें उसका सगा भाई होकर रहना है - चक्कि की इस प्रार्थना पर परीक्कुट्टि कोई जवाब नहीं दे सका। चक्कि का जीवन त्रासदी और पतन परीक्कुट्टि का भी पतन सा लगा। इधर चेंपन का सब कार्यक्रम टूट गया। वह थका - माँदा घर लौटने लगा। उसके जीवन की व्यवस्था और सफलता के लिए चक्कि एक अविभाज्य अंग भी। अब उसे खाट की शरण लेनी पड़ी है। 'चक्कि को

मालूम था कि जीवन में आदमी को एक साथी की ज़रूरत होती है। उसके लिए उसने एक रास्ता भी सुझा दिया - किसी दूसरी से शादी कर लेना। इतना कहकर चक्कि निश्चल हो गई।

परीक्कुट्टि ने ही चक्कि की मृत्यु का समाचार करुतम्मा को दिया। समुद्र तट पर यह चर्चा का विषय रहा। चक्कि की मृत्यु की खबर लेकर एक मुसलमान का आना पलनि को भी अच्छा नहीं लगा। चेंपन की दूसरी शादी के बारे में तथा सौतेली माँ के कटु व्यवहार के बारे में सोचते-सोचते पंचमी अतीव दुखित हो गई। उसे अपनी माँ की खूब याद आई। दूसरी पत्नी ने जब अपने पुत्र के लिए चेम्पन के रूपए चुरा लिए तब उसे असलियत की पहचान हो गई। पहली पत्नी चक्कि के सद्‌गुणों का उसने स्मरण किया। उन स्मृतियों ने उसके मस्तिष्क में बिजली उत्पन्न कर दीं। उस पर पागलपन सवार हो गया। उसने चक्कि के शव - संस्कार की जगह को खोदने का प्रयास किया। चक्कि के जीवित रहते समय चेंपन के मन में उसके प्रति थोड़ा भी अनुराग नहीं हुआ था। चक्कि के मरने के बाद स्वयं चेंपन ने कहा था कि कितनी ऐश्वर्य शालिनी थी उसकी पत्नी। हाँ चक्कि के मरने के बाद चेंपन का सारा वैभव नष्ट हो जाता है।

चक्कि के साथ सुख भोगने की इच्छा चेम्पन में प्रबल होने लगी थी। पर इसके लिए जो रास्ता उसने चुन लिया था वह गलत साबित निकला। चक्कि इसी कुटिल मार्ग में फँस गई थी। चेम्पन की कुवृतियों का परिणाम चक्कि को बहुत कुछ सहना पड़ा। उसी मानसिक तनाव के कारण वह थक गयी। मछुआरों के क्षेत्र का हो या कृषक क्षेत्र का एक औसतन औरत के जीवितोत्कर्ष का मोह कर जों के बंधन में यों ही फँस जाता है। उपन्यास के प्रमुख पात्रों की तरह दूसरी श्रेणी का यह पात्र भी उज्जवल सृष्टि है।

3.6 सारांश

चेम्मीन की कहानी का सार पढ़कर और उसके प्रमुख पात्रों के चरित्रों से परिचित होकर आपने देखा कि चेम्मीन उपन्यास किस प्रकार बृहत् मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने में कितना सफल हुआ है। समुद्र तट पर रहने वाले मछुआरों के जीवन का जीता-जागता, उनके दुख-दर्दो, खुशियों, इच्छाओं, विरोधाभासों, विश्वासों, आस्थाओं, मानवीय दुर्बलताओं की एक मानवीय कथा है - चेम्मीन। यह कथा किसी विचारधारा में बंधी हुई नहीं है। इस कथा ने परी/करुतम्मा/चक्कि/चेंपीन/पलनि जैसे अभूतपूर्व मानवीय चरित्रों की सृष्टि की है। इसी कारण चेम्मीन विश्व उपन्यासों की अग्रणी श्रेणी में बैठने का हकदार भी बना है।

3.7 प्रश्न

1 चेम्मीन की कथा का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

2 चेम्मीन में आपको सबसे ज्यादा किस चरित्र ने प्रभावित किया और क्यों?